बापुके आशीर्वाद

बापू से मिला
हुआ प्रसाद –
माला और
थैली

•

आनंद
हिंगोरानी

बापुके आशीर्वाद

(रोज़के विचार)

२०-११-४४ : १८-८-४५

१

मो. क. गांधी

विद्या को

दो शब्द

एक पवित्र आत्मा की स्मृति में और एक बिछुड़ी हुई आत्मा के संतोष के लिये बापू ने यह "रोज़ के विचार" लिखने आरंभ किये। दोनों की बापू बहुत क़द्र करते थे। अपने "रोज़ के विचार" लिखने के क्रम को उन्होंने बिरले ही तोड़ा।

विद्या (जिसकी स्मृति में यह विचार लिखे गये हैं) की जन्मपत्री में उसे "ऋषिकन्या" के नाम से ही संबोधन किया गया था। बापू उसे बड़ी साध्वी मानते थे। मुझे अपने जीवन में ऐसी आत्माओं का परिचय शायद ही हुआ हो।

मुझे खेद है कि विद्या के पवित्र जीवन से हम पूरा लाभ न उठा सके। परन्तु उसकी स्मृति में बापू के लिखे हुए यह "रोज़ के विचार" भी शिक्षा के सागर हैं। कैसा अच्छा हो यदि इस सागर में से मोती चुन कर हम अपना जीवन सफल करें!

१ यार्क प्लेस, नई दिल्ली
२० अगस्त, १९४८

जैरामदास दौलतराम

भूमिका

यह प्रथम वार नहीं जब कि मैं किसी पुस्तक के लिये भूमिका लिखने बैठा हूं। इससे पहले कई बार "गांधी सीरीज़" की पुस्तकों के लिये प्रस्तावनाएं लिखने का अवसर मिला है। किंतु आज और उस समय की मनोभावनाओं में कितना अंतर है! आज मुझ में न वह उत्साह है, न वह उल्लास। उसकी जगह मैं अपने को दुःख और शोक से घिरा हुआ पाता हूं।

मेरा बापू कहां है?—मेरा बापू जिसके पास मैं न केवल पुस्तकों के विषय में सलाह लेने के लिये जाता था, परंतु अपने जीवन के सब संकटों और संशयों में भी दौड़ कर जिसकी शरण लेता था। बापू सचमुच 'बापू' थे। वही मेरे जीवन का बल और सहारा थे।

यह लिखते हुए कई घटनाएं याद आती हैं और मन भर आता है। जब मानसिक वेदना से पीड़ित मैं बापू के पास जाकर उनके चरण-कमल छूता था और वह अपनी स्वाभाविक मुसकुराहट से मेरी पीठ पर जोर से आशीर्वाद की थपकी लगा कर पूछते थे: "आनंद, कैसा है?" उस समय ऐसा लगता था, मानो मन का आधा बोझ एकाएक कम हो गया हो। फिर किस प्रकार बापू मुझे ढाढ़स देते थे, उस अलौकिक प्रेम का स्मरण-चिह्न रूप और साक्षी यह सारी पुस्तक ही है।

सब से बड़ी घटना जिसने मेरे दिल को भारी चोट पहुँचाई, वह थी मेरी पत्नी विद्या की अकाल मृत्यु। बापू के अलावा यदि मुझे किसी और से प्रेरणा मिलती थी, तो वह विद्या से। वही मुझे पहले-पहल बापू के पास साबरमती आश्रम में भेजने का कारण हुई थी। बापू उसे अपनी बेटी मानते थे और उन्होंने काफ़ी समय तक उसे अपने पास आश्रम में भी रखा था। सच तो यह है कि बापू और विद्या, ये दो व्यक्ति ही मेरे जीवन में परिवर्तन लाने के हेतु थे। यदि वे न होते, तो पता नहीं मैं आज कहां और किस हालत में होता!

२० जूलाई, १९४३ को जब विद्या इस संसार से विदा हो गई, तब मुझे ऐसा जान पड़ा मानो सारा संसार मेरे लिये सूना हो गया। एक बापू ही थे जो मेरे दुःखी मन को आश्वासन दे सकते थे, लेकिन उस समय वह मेरी पहुँच से बहुत दूर, आग़ाखां महल, पूना, में थे। जब बापू ६ मई, १९४४ को छूटे तब मैं लखनऊ में अपने कान का इलाज करवा रहा था। बापू से मिलने के लिये अधीर-सा हो उठा, इस कारण उनको एक तार मुंबई भेजा, जिस में मैंने लिखा था कि मैं अपने को कितना अकेला महसूस कर रहा हूं। कान का इलाज अधूरा ही छोड़ कर मैंने उनके पास जाने की आज्ञा माँगी। उसके उत्तर में बापू ने यह तार भेजा:

"अपने को अकेला समझने की तुम्हें इजाज़त नहीं है। ईश्वर ही हमारा निरंतर साथी है। कान का इलाज पूरा करवा कर आ सकते हो।"

इस तार से मुझे कुछ धीरज तो मिला, किंतु चित्त की शांति न पा सका। इसलिये बापू को इस संबंध में एक पत्र लिखा, जिस के उत्तर में बापू ने २ जून, १९४४ को इस प्रकार लिखा :

"तुम्हें अब शोक करना छोड़ देना चाहिये। जो कुछ तुमने पढ़ा और पचाया है, उस सबसे सहारा लो। एक सच्चा विचार भेजता हूं जो कि मुझे एक बहन ने भेजा है। उसे अंतर में उतार लो। विद्या मरी नहीं है। वह तो अपना शरीर, जिस में वह निवास करती थी, यहां छोड़कर चली गई है, और उसने अपने योग्य दूसरा शरीर धारण कर लिया है।"

और इस खत के साथ-साथ बापू ने अंग्रेज़ी में छपा हुआ वह 'सच्चा विचार' भी भेज दिया था जो कि उन्हें पूज्य कस्तूरबा की मृत्यु पर एक पश्चमी महिला, श्रीमती ग्लेन० ई० स्नाईडर, ने ग्राईम्स (अमेरीका) से आश्वासन देने के लिये भेजा था :

"यह ठीक नहीं, ऐसा मत कहो
कि वह मर गई है। वह सिर्फ़ हमसे दूर चली गई है!
प्रसन्नतापूर्ण मुस्कान के साथ,
बिदाई का संकेत करते हुए
वह एक अनजाने देश में चली गई है,
और हमें यह कल्पना करते हुए छोड़ गई है
कि कितना सुंदर वह देश होगा जहां उसने बसना पसंद किया है!
यह समझो कि उसे वहां भी वैसा ही प्रेम प्राप्त है
जैसा कि उसे यहां प्राप्त था;
यह समझो कि वह अब भी वैसी ही है, और कहो—
वह मरी नहीं, सिर्फ़ हमसे दूर चली गई है!"

फिर २० जून, १९४४ को एक पत्र में बापू ने लिखा :

"विद्या की मृत्यु पर तुम हर समय विचार न किया करो और न विचलित ही हो। यदि ज़िंदा रहते हुए वह तुम्हारे जीवन में प्रेरणा देती थी, तो अब, जब कि वह अपने विश्रामघर गई है, और भी अधिक प्रेरणा तुमको उससे मिलनी चाहिये। मेरी समझ में तो आत्माओं के सच्चे ऐक्य का यही अर्थ है। इसका अत्युत्तम उदाहरण ईसा का है, और आधुनिक काल में रामकृष्ण परमहंस का। मरने के बाद वे और भी प्रभावशाली बने। उनकी आत्मा कभी मरी नहीं और ऐसे ही विद्या की भी आत्मा नहीं मरी है। इसलिये तुम्हें शोक करना अवश्य छोड़ देना चाहिये, और सामने आनेवाले कर्तव्य का ही विचार करना चाहिये।"

फिर १९ जूलाई, १९४४ को एक पत्र में उन्होंने लिखा :

"विद्या बड़ी साध्वी थी। उसका हृदय सुनहरी था। उसकी त्याग की इच्छा बड़ी थी। उसका प्रेम समुद्र-सा था। तुमको उसके लायक़ बनना है।"

इस प्रकार पत्र-व्यवहार द्वारा बापू मुझे शांति-पाठ सिखाते रहे। जब कुछ दिनों के बाद उन्होंने लिखा कि वह ३० सितम्बर, १९४४ को सेवाग्राम जा रहे हैं, और अगर मुझे उनसे मिलना है तो मैं भी वहां जा सकता हूं, तब मैं अपने आपको रोक न सका, और शीघ्र वहां पहुँच गया। बापू के पास पहुँचने पर पहले तो अपने दुःख को दबा कर खुश रहने का मैंने प्रयत्न किया, लेकिन उसमें सफल न हो सका। इसलिये एक दिन, प्रातःकाल की प्रार्थना के बाद, मैं बापू के पास चला गया। उस समय वह मच्छरदानी के अंदर लेटे हुए थे। मैं अपना सिर उनकी छाती पर रख कर खूब रोया। क़रीब घण्टे भर तक मैं ऐसे सिर झुका कर बैठा रहा और बापू बड़े प्यार से आश्वासन के मीठे मीठ शब्द मेरे कान में बोलते रहे। बस, उस दिन से रोज़ प्रातःकाल बापू के पास जाकर इस प्रकार अपने दुःखी मन को शांत करने का मेरा नियम-सा बन गया।

सेवाग्राम ग्राश्रम में पूरे दो मास रहा। जो बहुमूल्य समय मैंने इस प्रकार अपने प्यारे बापू के साथ बिताया और जो प्रेम उन्होंने मुझ पर बरसाया, उसे मैं कैसे भूल सकता हूं ! ग्राज भी यह सोच कर कि किस भांति बापू मुझे अपने बच्चे की तरह समझाते थे, मेरी ग्रांखों में पानी ग्रा जाता है ! बापू न केवल उस समय हमदर्दी दिखाते और धीरज देते, बल्कि यह विचार कर कि अपने दुःख में मैं उनके उपदेश कहीं भूल न जाऊं, वह काग़ज़ पर भी कुछ लिख देते, और मुझे उस पर दिन भर मनन करने के लिये कहते। १३ अक्तूबर, १९४४ से १५ दिन तक बापू लगातार लिखते रहे और उसके बाद कभी कभी। यह तब तक चलता रहा जब तक उन्होंने मुझे नैसर्गिक उपचार के लिये भीमावरम् भेजा।

मैं समझता हूं कि मेरे दुःखी दिल को सांत्वना देने के लिये जो कुछ भी बापू ने उन दिनों लिखा वह सबके लिये सहारा रूप हो सकता है—विशेषकर ग्राज जब बापू अपने स्थूल शरीर से हमारे पास नहीं हैं। परंतु यह सब भूमिका में देना मुश्किल-सा लगता है। इसलिये केवल कुछ दिनों के विचार यहां दिये जाते हैं:

"जो सिर्फ़ ईश्वर का सहारा लेते हैं, वे मनुष्य का सहारा नहीं लेंगे, चाहे वे मरें हों चाहे ज़िंदा। यदि तुमने इसे पचा लिया, तो तुम कभी शोक नहीं करोगे।"

१३–१०–४४

"तुम 'ट्राइ अगेन' ('फिर से कोशिश करो') वाली कविता जानते हो ? दुःख से लाचार बनने की तुम को इजाज़त नहीं है। दूसरा सब भरोसा निकम्मा है, एक ईश्वर पर ही विश्वास रखो। विद्या की मौत से यही शिक्षा मिलती है। तुम्हारे प्रेम की परीक्षा हो रही है।"

१४–१०–४४

"ईश्वर की कृपा ईश्वर का काम करने से ग्राती है। तुमको ईश्वर का काम करना है। कभी चरखा चलाता है ? चरखा चलाना सब से बड़ा यज्ञ है। रोते रोते भी चरखा चलाग्रो।"

१५–१०–४४

"शांति में, सुख में तो सबकुछ होता है। चरखा दुःखी का, भूखों का, सहारा है। दुःख में तो छूटना ही नहीं चाहिये।"

१६–१०–४४

"तुम्हें अपनी दिनचर्या ऐसी बना लेनी चाहिये कि एक क्षण भी फ़ुरसत न मिले। यही मृत प्रियजनों के प्रति सच्चा प्रेम है। अंग्रेज़ों को देखो। वे भी अपने प्रियजनों को प्यार करते हैं, लेकिन जब वे प्रियजनों से जुदा होते हैं तो और भी अधिक अपने को सेवाकार्य में समर्पण कर देते हैं।"

१७–१०–४४

"मुए ज़िंदों को कुछ भेजते हैं, उसका हमें पता नहीं चलता है; लेकिन ज़िंदे मुओं को भेजते हैं, यह निःसंदेह है। इसलिये हम उनके पीछे कभी न रोयें।"

"ईश्वर-कृपा (Grace) ईश्वर का काम करने से आती है। ईश्वर के काम शरीर से, मन से, वाणी से, दुःखी की सेवा करने से होते हैं।"

१८–१०–४४

"ऐसा सोचो कि ग़रीब आदमी तुम्हारी हालत में क्या कर सकता है। उसकी पत्नी मर जाय, तो वह दुगुना काम करेगा। वह भी ईश्वर का भक्त है। भीतर का आनंद ईश्वर का काम करने से ही पैदा होता है। हम सब अपने को ग़रीब की हालत में रख दें। बहरेपन को ईश्वर की बख़्शीश समझो। एक क्षण भी बग़ैर काम के रहना ईश्वर की चोरी समझो। मैं दूसरा कोई रास्ता भीतरी या बाहरी आनंद का नहीं जानता हूं।"

"सबसे अच्छा तरीक़ा तुम्हारे लिये २० ता० मनाने का तो यह है कि तुम सारा दिन सूत कातते रहो, या अपनी रुचि के अनुसार आश्रम के कोई भी काम में लगे रहो, और उसके साथ रामनाम को जोड़ दो।"

"(ग़रीबों को खिलाना) बिलकुल ग़ैरज़रूरी है। जिन्हें सचमुच ज़रूरत हो, उन्हें तुम भले ही कुछ दे सकते हो।"

१६–१०–४४

"आज का दिन तुम्हारे लिये शुभ दिन है। विद्या को मैंने काफ़ी रुलाया था। वह तुम्हारे जैसे रो देती थी और कहती थी : 'भगवान बताओ'। मैंने उसे डाँटा और कहा : 'भगवान को चरखे में देखेगी।' आखिर समझ गई।"

"हम यंत्र हैं और यांत्री भी। शरीर यंत्र है, आत्मा यांत्री। आज तुम्हें इस यंत्र से यंत्रवत् काम लेना है और मुझे हिसाब देना है।"

२०–१०–४४

"मनुष्य जिसका ध्यान करता है, उसके मारफ़त ईश्वर को निश्चित देखता है। चरखा सबसे अच्छा प्रतीक है, और उसका दृश्यफल भी है।"

"मनुष्य को मनुष्य का सहारा चाहिये, इसलिये तो आश्रम वग़ैरा संस्थायें रहती हैं। मनुष्य का सहारा सान्निध्य से ही होता है, ऐसा नहीं है। कोई डाक द्वारा करते हैं, कोई सिर्फ़ विचार से, कोई मरे हुए के सद्वचनों से, जैसे हम तुलसीदास से रोज़ मिलते हैं।"

२१–१०–४४

"आशा अमर है। उसकी आराधना कभी निष्फल नहीं होती।"

२२–१०–४४

"मेरे पास बैठने में कोई हानि नहीं है, लेकिन ऐसे वक़्त पर, जैसे महादेव करता था और कृपालाणी, तकली चलाना। पीछे ईश्वर के समय की चोरी नहीं होगी। तकली हमारा मूक मित्र है। कुछ आवाज़ ही नहीं करती, और जगत के लिये

जो धागा चाहिये उसे निकालती रहती है। तकली चलाते समय हम सबकुछ देख सकते हैं और सुन सकते हैं। मैं तो यहां तक जाता हूं कि ईश्वर-कृपा होगी तो इस तरह कर्म में जुते हुए रहने से कान भी खुल जाय। लेकिन जब इस तरह कर्मयोगी बनोगे, तब कान की परवाह थोड़ी रहेगी। वानर-गुरु तो जान-बूझ कर कान बंद करता है, क्योंकि आसपास की आवाज़ उसके रास्ते में रुकावट डालती है।"

२३-१०-४४

"मेरी शांति और मेरे विनोद का रहस्य है मेरी ईश्वर, यानी सत्य, पर अचल श्रद्धा। मैं जानता हूं कि मैं कुछ कर नहीं सकता हूं। मुझ में ईश्वर है, वह मुझसे सबकुछ कराता है, तो मैं कैसे दुःखी हो सकता हूं? यह भी जानता हूं कि जो कुछ मुझ से कराता है, मेरे भले के ही लिये है। इस ज्ञान से भी मुझे खुश रहना चाहिये। 'बा' को ईश्वर ले गया सो 'बा' के भले के लिये। इसलिये 'बा' का वियोग मुझे दुःख देनेवाला नहीं होना चाहिये। इस वास्ते विद्या की मृत्यु से तुम्हारा दुःख मानना पाप समझो।"

२४-१०-४४

"शारीरिक काम ज़्यादा करो। पढ़ने का, पढ़ाने का अवश्य करो, लेकिन तकली, चरखा पर खूब काम करो। भाजी साफ़ करो, आश्रम के काम में हिस्सा लो और सब काम करने में ईश्वर के दर्शन करो, क्योंकि ईश्वर सब में भरा है।"

२५-१०-४४

"मेरे लेखों में से जो निकालना है सो निकालो। यह काम अच्छा है। लेकिन शारीरिक परिश्रम खूब उठाना चाहिये। विद्या का स्मरण करना और रोना बहुत हानिकर है। वह स्मरण अच्छा है जो आत्मा को ऊँचे चढ़ाता है, जागृत करता है। आत्मा का स्वरूप सत् (सत्य), चित् (ज्ञान हृदय से मिला हुआ, अनुभवसिद्ध) और आनंद है। आनंद में दोनों की परीक्षा है—आनंद भीतर का, जो बाहर में देखने में आता है।"

२८-१०-४४

"सब ईश्वर करता है और वह जो करता है वह अच्छे के ही लिये है, ऐसा समझ कर आनंद में रहो।"

१३-११-४४

"रोना हँसना दिल में से निकलता है। (मनुष्य) दुःख मान कर रोता है। उसी दुःख को सुख मान कर हँसता है। इस-लिये ही रामनाम का सहारा चाहिये। सब उनको अर्पण करना तो आनंद ही आनंद है।"

१६-११-४४

इस प्रकार बापू मेरे उद्विग्न मन की शांति के लिये मुझे हर रोज़ प्रबोध देते थे। उनको मेरे स्वास्थ्य का भी बराबर ख़याल रहता था। यद्यपि वह मुझे बार बार कहते थे कि मैं अपने बहिरेपन को "ईश्वर की बख़्शीश" समझूं, फिर भी मैं चिंतित रहता था। इस कारण उन्होंने मुझे क़ुदरती इलाज के लिये भीमावरम् भेजने का निर्णय किया। मैं २८ नवम्बर को वहां जाने वाला था और जैसे-जैसे बापू से बिदा होने का समय निकट आ रहा था, मैं एक तरह की व्याकुलता अनुभव करता था। बापू के मीठे संसर्ग का और उनके प्रेरणा देनेवाले उपदेशों का मैं ऐसा आदी हो गया था कि उनसे जुदा होना मुझे कठिन-सा जान पड़ता था। मैं इसी चिंता में था कि मन में एक विचार उठा। कैसा अच्छा हो यदि बापू मेरे लिये हर रोज़ कुछ न कुछ लिखते रहें और मुझे भीमावरम् डाक द्वारा भेजते रहें!

दूसरे दिन सवेरे, मैंने बड़े संकोच के साथ बापू से यह बात कही। बापू ने बड़े ध्यान से मेरी बात सुनी और कहा: "तुम्हारी बात तो अच्छी है, इस पर ज़रूर विचार करूँगा।" दो-तीन दिन के भीतर ही बापू ने लिखना स्वीकार कर लिया। मुझे बड़ी ख़ुशी हुई। मैंने एक अलबम बना कर उनको दे दिया। २२ अक्तूबर को जब बापू ने अपने प्रसन्न मुख से मुझ से कहा: "आनंद, मैंने तुम्हारे लिये लिखना शुरू कर दिया है, और वह भी २० ता० से", तब मैं ख़ुशी से फूला न समाया, और एकाएक मेरा सिर सच्ची कृतज्ञता से उनके सामने झुक गया। उन्होंने २० ता० का जो विशेष उल्लेख किया, उसका महत्त्व मैं ठीक ठीक समझ गया; क्योंकि उस दिन को मैं बहुत ही पवित्र मानता था और विद्या की याद में हर महीने मनाया करता था। उस दिन (२०-११-४४) से क़रीब दो साल तक बापू रोज़ मेरे लिये और विद्या की स्मृति में एक उपदेश लिखते रहे।

बापू से फिर मेरा मिलना पूना में जून १९४६ में हुआ। वहां एक दिन अकस्मात् मैंने उनसे पूछा कि वह "रोज़ के विचार" लिखते हैं या नहीं। बापू ने अपनी स्वाभाविक मुसकुराहट के साथ अपने सामने पड़ी हुई नोटबुक दिखायी। उस पर उनके पवित्र हाथों से मेरा नाम लिखा हुआ था। उन्होंने कहा : "देखो आनंद, मैंने इस पर तुम्हारा नाम लिख छोड़ा है। तुम्हारे अलबम के काग़ज़ पूरे हो जाने पर मैंने इस पर ही विचार लिखना जारी रखा है।"

यह सुन कर मैं अति प्रसन्न हुआ और जब बापू से उन विचारों के छपवाने की आज्ञा माँगी, तब उन्होंने कहा : "इन में धरा ही क्या है, जो तुम छपवाना चाहते हो ? यदि छपवाना ही है तो मेरे मरने के बाद छपवाना। अब क्या जल्दी है ? कौन जानता है कि जो कुछ मैं आज लिख रहा हूं, उस पर मैं आखिर दम तक टिक सकूँगा। यदि टिक सका तब तो छपवाना ठीक होगा, नहीं तो नहीं।"

"बापू आप तो १२५ वर्ष ज़िंदा रहेंगे, तब तक मैं तो ज़िंदा नहीं रहूँगा। फिर यह 'विचार' मैं कैसे छपवा सकूंगा ?" मैंने हँस कर कहा।

बापू गंभीर होकर बोले : "हां, १२५ वर्ष ! अगर मैं इस तरह ईश्वर का काम करता रहा, जैसे कि अब कर रहा हूं, तब तो मुझे ज़िंदा समझो। लेकिन इससे ज़रा भी कम कर पाया तो समझना कि उस दिन से तुम्हारा बापू मरे हुए के बराबर ही है। पता नहीं कितना समय मैं इस तरह ईश्वर का काम कर सकूँगा।"

बापू को इतना गंभीर देख मैं चुप रहा, और इस बात को वहीं छोड़ दिया।

फिर मार्च १९४७ में मुझे "भंगी निवास", दिल्ली, में बापू के साथ १५ दिन रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहां एक दिन मैंने बापू से पूछा कि उन्होंने "रोज़ के विचार" लिखना क्यों बन्द कर दिया था। बापू ने उत्तर दिया : "नवाखाली में हिन्दू-मुसलमानों की एकता के लिये मैंने सबकुछ छोड़ा, जिससे मैं एकचित्त होकर उसकी ज़िम्मेदारी को पूरी तौर से निभा सकूं। आश्रम छोड़ा, 'हरिजन' के लिये लिखना छोड़ा। तब सोचा कि ये विचार लिखना भी क्यों न बंद कर दूं। मैं लिखना बोझ तो समझता ही था। रोज़ रात को काम पूरा होने पर दिल में विचार आता था कि अभी कुछ काम और करना है। मैं कहीं से देख कर भी नहीं लिख सकता था, फिर यह भी ख़याल रहता था कि दुबारा वही न लिखूं। इसलिये लिखना बंद ही कर दिया। अब जो मैं रोज़निशी रखता हूं, वह तो जब मैं थक जाता हूं तो

मनू या किसी और को लिखने के लिये कह देता हूं। लेकिन ये 'विचार' तो मुझे अपने ही हाथ से लिखने पड़ते थे न ? इसलिये भी बोझ-सा लगते थे। तो भी अगर तुम को मेर लिखने से कुछ आनंद मिलता है, तो मैं फिर से लिखने के लिये तैयार हूं।"

बापू मेरे जैसे तुच्छ मनुष्य के लिये इतना परिश्रम उठावें, यह बात भला मैं कैसे मान सकता था ! मैंने कहा : "बापू मुझे आनंद तो जरूर मिलता है, मगर मैं यह नहीं चाहता कि मेरे लिये आप को इतना कष्ट उठाना पड़े। मैं देख रहा हूं आप आजकल किस प्रकार काम में लगे हुए हैं। आपने पहले ही मुझ पर बड़ी कृपा की है। अब आशीर्वाद दें कि मेरी ईश्वर पर श्रद्धा बढ़े और अपने को दुःखी न मानूं।"

कुछ दिन के बाद मैंने बापू से फिर 'विचार' छपवाने की आज्ञा माँगी। इस बार बापू ने अपनी अनुमति दे दी, और कहा : "लेकिन अच्छा होगा यदि एक बार सुशीला या प्यारेलाल से उन्हें ठीक करवा लो। इनको सुधारने का समय मैं तो अब नहीं निकाल सकूँगा। अच्छा होगा अगर सुशीला से यह काम कराओ। वह अच्छी तरह समझ सकेगी, क्योंकि जब ये विचार लिखे गये थे वह मेरे साथ बराबर थी। देखो, अगर वह बिस्तर पर पड़ी पड़ी सुधारने का समय निकाल ले।" (सुशीला बहन उस समय मुंबई में अस्पताल में थीं।) उस समय तो इन विचारों को सुशीला बहन से सुधरवाने का अवसर न मिल सका, और इस बीच में वह महान् दुर्घटना घटी जिसके कारण बापू को अपना शरीर तजना पड़ा। फ़रवरी के आरंभ में मैं बापू की अस्थियों के दर्शन के लिये दिल्ली गया था। उस अवसर पर सुशीला बहन ने इन विचारों को पढ़ कर उनमें कुछ थोड़े सुधार किये। इसके लिये मैं उनका आभारी हूं। लेकिन यह कहना अनुचित न होगा कि इन विचारों में दरअसल सुधार की बहुत कम गुंजाइश थी। बापू का यह विचार कि उनकी यह पुस्तक उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हो, वह भी दैव की करनी से पूरा हुआ !

इन विचारों की जो अपनी सुगंधि है, वह सदा के लिये बापू की याद को जागृत रखनेवाली है। यह 'विचार' एक ऐसे व्यक्ति के हैं, जिसने अपने जीवन में बराबर उन पर अमल करने का प्रयत्न किया है। बापू के जीवन भर की अमर साधना इनके पीछे है। इस कारण इन विचारों का मूल्य हमारे अंकन से परे हो जाता है।

जहां तक मेरा सवाल है, यह 'विचार' मुझे सदा सदा सत्प्रेरणा देते रहेंगे। और यदि मैं अपने जीवन में इन पर कुछ अंशों में भी

चल सका, तो अपना अहोभाग्य मानूँगा। इन्हें अपने ही लिये सुरक्षित रखना मेरे लिये एक तरह की कृपणता होगी। यदि मुझ जैसे शोक-ग्रस्त दूसरे राहियों को इनसे कुछ सांत्वना मिल सके, तो यह मेरे लिये परम संतोष की बात होगी।

पुस्तक का शीर्षक चुनने का स्पष्ट कारण है। बापू के इन विचारों को मैं अपने लिये आशीर्वाद के रूप में मानता हूं। मुझे तनिक भी संदेह नहीं है कि औरों के लिये भी यह ऐसे ही सिद्ध होंगे।

७, एडमान्स्टन रोड, इलाहाबाद
१८ सितम्बर, १९४८

आनंद हिंगोरानी

* * *

पुनश्चः

जैसा मैंने ऊपर बताया है, बापू ने इन विचारों को लिखने का क्रम क़रीब दो साल तक जारी रखा था। इस पहली जिल्द में २० नवंबर, १९४४ से १९ अप्रैल, १९४५ तक के, अर्थात् ५ महीने के दैनिक विचार दिये गये हैं। इसके बाद ऐसी ही तीन और जिल्दें प्रकाशित करने की योजना है और इस तरह लिखे गए विचार चार जिल्दों में पूरे होंगे।

यह मेरे लिये बड़े दुःख की बात है कि बापू इन विचारों को अंग्रेज़ी का रूप न दे सके, जैसा कि उन्होंने मेरे अनुरोध से क़बूल कर लिया था। बापू के इन विचारों को लिखना आरंभ करने के दो-तीन दिन के भीतर ही मैंने बापू से चाहा था कि वह इन का अनुवाद अंग्रेज़ी में कर दें, क्योंकि ऐसा करने से यह 'विचार' सारे संसार के सामने आ सकेंगे। मैंने कहा था कि इनका अनुवाद मैं करके उन्हें दिखाऊँगा और बाद में उसको वह सुधार कर उसे अपने हाथ मे लिख देंगे तो अच्छा होगा। बापू को पहले तो कुछ संकोच हुआ, क्योंकि उन्हें चिंता थी कि वह इतना समय कैसे निकाल सकेंगे। फिर भी उन्हें मेरी बात अच्छी लगी और उन्होंने मुझसे अनुवाद का काम शुरू करने को कहा।

मैं बापू के अनेक कामों को जानते हुए उन पर बहुत बोझ न डाल सकता था। इसलिये मैंने बात जहां की तहां रहने दी। लेकिन पिछली फ़रवरी में, जब मैं दिल्ली में था, मुझे एक ऐसी बात मालूम हुई जिसे जानकर मैं स्तंभित रह गया। बापू किसी भी ज़िम्मेदारी को एक बार लेकर उसके निभाने के लिये कितना फ़िकर रखते थे, यह बात इसका एक मिसाल थी। इसी से उसका बताना आवश्यक हो जाता है। मुझसे राजकुमारी अमृत कौर बहन ने कहा कि चूंकि बापू को फ़ुर्सत न मिल सकी, उन्होंने मेरी इच्छा को पूरी करने के लिये अंग्रेज़ी अनुवाद का काम उन्हीं (राजकुमारी बहन) को सौंप दिया था। राजकुमारी बहन भी काफ़ी कामों में फँसी हुई हैं, लेकिन उन्होंने कहा है कि वह बापू की इस इच्छा को अवश्य पूरा करने का यत्न करेंगी। इसके लिये उन्होंने मुझसे अनुवाद का एक मसविदा तैयार करने को कहा है। यह ज़ाहिर करते हुए मुझे ख़ुशी होती है कि कुछ काल के बाद अंग्रेज़ी पाठकों के लाभ के लिये यह 'विचार' अंग्रेज़ी भाषांतर में भी प्रकाशित हो जायेंगे, और वैसे ही देश की अन्य भाषाओं में भी।

आ० हिं०

बापुके आशीर्वाद

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

ईश्वरके नाम तो अनेक हैं
लेकिन
एक ही नाम ढूंढें तो वह है सत्, सत्य.
इसलिये
सत्य ही ईश्वर है.
20-11-47

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
ईश्वर के नाम तो अनेक हैं
लेकिन एक ही नाम ढूढ़ें
तो वह है सत्, सत्य।
इस लिये सत्य ही
ईश्वर है।
२०-११-४४
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

सत्यके दर्शन बगैर अहिंसाके
हो ही नहीं सकते.
इसीलिये कहा है कि
अहिंसा परमोधर्मः

२१-११-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

सत्य के दर्शन बग़ैर अहिंसा के हो
ही नहीं सकते। इसी लिये कहा है
कि अहिंसा परमोधर्मः।

२१-११-४४

बापुके आशीर्वाद

रघुपति राघव राजाराम — ॐ राम — पतित पावन सीताराम

सत्यकी शोध और अहिंसाका पालन ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, सर्वधर्म समानत्व, अस्पृश्यता निवारण इ. बगैर हो नहीं सकता.

२२-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

पतित पावन सीताराम

सत्य की शोध और अहिंसा का पालन
ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, सर्वधर्म
समानत्व, अस्पृश्यता निवारण इत्यादि
बग़ैर हो नहीं सकता।

२२-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम — ॐ राम — पतित पावन सीताराम

ब्रह्मचर्य का अर्थ यही मनसा,
वाचा, कर्मणा इंद्रिय निग्रह है.
जो स्त्रीगमन नहीं करता हुआ
मनमें विकारमय रहता है वह
सच्चा ब्रह्मचारी न माना जाय.

२३-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

ब्रह्मचर्य का अर्थ यहां मनसा, वाचा, कर्मणा
इंद्रिय निग्रह है। जो स्त्री गमन नहीं
करता हुआ मन से विकारमय रहता है, वह
सच्चा ब्रह्मचारी न माना जाय।

२३-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ राम

पतित पावन सीताराम

अस्तेय का अर्थ चोरी नहीं करना इतना ही नहीं है. जो वस्तु की हमें आवश्यकता नहीं है उसे रखना, वो भी चोरी है. चोरी में हिंसा तो भरी है.

२८-११-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

अस्तेय का अर्थ चोरी नहीं करना इतना
ही नहीं है। जो वस्तु की हमें आवश्यकता
नहीं है उसे रखना, लेना भी चोरी है।
चोरी में हिंसा तो भरी है।

२४-११-४४

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

ॐ राम

अपरिग्रह से मतलब यह है कि
हम कोई चीज़ का संग्रह न करें
जिसकी हमें आज दरकार नहीं है।

२५-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम सबको सन्मति दे भगवान

बापुके आशीर्वाद

रघुपति राघव राजाराम — पतित पावन सीताराम

अपरिग्रह से मतलब यह है कि हम कोई
चीज़ का संग्रह न करें जिसकी हमें आज
दरकार नहीं है।

२५-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम | पतित पावन सीताराम

अभय में सब प्रकार के डरका अभाव
होना चाहिये. मौतका डर, मालमिलकतका
डर, कुटुंबका डर, अपमानका डर, आरोग्यका
डर, शस्त्रप्रहारका डर, किसीके क्रोधका डर —
इन सब और ऐसे डरों से मुक्ति, अभय है.

२६-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम | बापुके आशीर्वाद | सबको सन्मति दे भगवान

अभय में सब प्रकार के डर का अभाव होना चाहिये। मोत का डर, मारपीट का डर, भूख का डर, अपमान का डर, लोक-लाज का डर, भूत प्रेत का डर, किसी के क्रोध का डर—इन सब और ऐसे डरों से मुक्ति, अभय है।

२६-११-४४

जैसे हम अपने धर्मका आदर करते हैं
वैसे ही दूसरे धर्मका करें - मात्र सहन करना
पर्याप्त नहीं है।

२७-११-४७

रघुपति राघव राजाराम — ॐ राम — पतित पावन सीताराम

जैसे हम अपने धर्म को आदर देते हैं
ऐसे ही दूसरे धर्म को दें—मात्र सहिष्णुता
पर्याप्त नहीं है ।

२७-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

ॐ
हे राम

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

अस्पृश्यता निवारणके मानी हरिजनोंको छूना इतनाही नहीं लेकिन उनको हमारे रिश्तेदारों जैसे समझना अर्थात जैसे हमारे भाई बहनोंसे वर्तते हैं ऐसे उनसे वर्तना। न कोई ऊंच है न कोई नीच.

२८-११-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम ॐ हे राम पतित पावन सीताराम

अस्पृश्यता निवारण के मानी हरिजनों को छूना इतना ही नहीं, लेकिन उनको हमारे रिश्तेदारों जैसे समझना अर्थात जैसे हमारे भाई बहनों से वर्तते हैं ऐसे ही उनसे वर्तना । न कोई ऊंच है, न कोई नीच ।

२८-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापु के आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम — ॐ श्री राम — पतित पावन सीताराम

योगश्चित्तवृत्ति निरोधः

यह पातंजल योगदर्शन का पहला सूत्र है. योग चित्तवृत्ति का निरोध है, यानि हमारे दिलकी उठते तरंगों पर अंकुश रखना, उसे दबा देना यह योग हुआ.

२९-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः

यह पातंजल योग दर्शन का पहला सूत्र है। योग चित्तवृत्ति का निरोध है, यानी हमारे दिल में उठते तरंगों पर अंकुश रखना, उसे दबा देना, यह योग हूआ।

२९-११-४४

जिसके चित्तमें तरंग उठते ही रहते है
वह सत्य के दर्शन कैसे कर सकता है?
चित्तमें तरंग का उठना समुद्र के तुफान
जैसा है. तुफानमें जो सुकानी सुकान
पर काबू रख सकता है वह सलामत
रहता है. ऐसे ही चित्त की अशांतिमें
भगवाननाम का आश्रय लेकर वह
जीत जाता है.

२०-११-४४

रघुपति राघव राजाराम ॐ हे राम पतित पावन सीताराम

जिस के चित्त में तरंग उठते ही रहते हैं वह सत्य के दर्शन कैसे कर सकता है। चित्त में तरंग का उठना समुद्र के तुफ़ान जैसा है। तुफ़ान में जो सुकानी सुकान पर काबू रख सकता है वह सलामत रहता है। ऐसे ही चित्त की अशांति में जो रामनाम का आश्रय लेता है वह जीत जाता है।

३०-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापु के आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

"वृंदावन की गलीयों" भजन गान करने लायक है.
वह रचना है और इसको शीखना चाहिता
है. हम क्या करते हैं?

१-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

"*वृत्रन् की मत ले*"[1] भजन मनन करने योग्य है। वह तपता है और हमको शीतलता देता है। हम क्या करते हैं?

१-१२-४४

[1] देखिये परिशिष्ट नं० १।

मिथ्याज्ञान का हम इलाज करते हैं
मिथ्याज्ञान वह है जो इनको सत्य से
दूर रखता है या करता है

2-12-47

रघुपति राघव राजाराम ॐ पतित पावन सीताराम

मिथ्या ज्ञान से हम हमेशा डरते रहें।
मिथ्या ज्ञान वह है जो हमको सत्य से दूर
रखता है या करता है।

२-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

सत्यके दर्शनके लिये संतोंका चरित्र पढ़ना और उनका मनन करना आवश्यक है.

३-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापु के आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम — पतित पावन सीताराम

सत्य के दर्शन के लिये संतों का
चरित पढ़ना और उसका मनन
करना आवश्यक है।

३-१२-४४
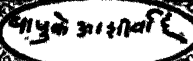
ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

जब भगवान् निज मुख से कहते हैं वे सब प्राणी में विहार करते हैं तो हम किस से वैर करें? (आज के भजन का अनुवाद)[1]

४-१२-४४

[1] देखिये परिशिष्ट नं० २।

रघुपति राघव राजाराम ॐ हे राम पतित पावन सीताराम

मीराबाईके जीवनमें हम बडी बात यह देखते हैं कि उसने भगवान् के लिये अपना सब कुछ छोड़ा-पति भी.

५-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

मीराबाई के जीवन से हम बड़ी बात
यह सीखते हैं कि उसने भगवान् के लिये
अपना सबकुछ छोड़ा—पति भी।

५-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
हे राम
शुद्धात्मा मनुष्य क्या नहीं कर सकता!
सब कुछ कर सकता है।
६-१२-४४
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

श्रद्धा से मनुष्य क्या नहीं कर सकता ?
सबकुछ कर सकता है।

६-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
श्रद्धावान मनुष्य पहाड़ों को उल्लंघन करता है।
७-१२-४४
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
हे राम
पतित पावन सीताराम

श्रद्धा से मनुष्य पहाड़ों को उलंघन
करता है।

७-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम — पतित पावन सीताराम

ॐ राम

जो मनुष्य किसी एक चीज़ पर एकनिष्ठासे काम करता है वह आखीर सब चीज़ करनेकी शक्ति हासल करेगा.

८-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — सबको सन्मति दे भगवान

बापुके आशीर्वाद

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

जो मनुष्य किसी एक चीज़ पर एकनिष्ठा
से काम करता है वह आख़ीर सब चीज़
करने की शक्ति हासल करेगा।

८-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

ॐ हे राम

पतित पावन सीताराम

सच्चा सुख बाहरसे नहीं मिलता है
अंदरसे ही मिलता है.

९-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

सच्चा सुख बाहर से नहीं मिलता है,
अंतर से ही मिलता है।

९-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम
ॐ
पतित पावन सीताराम
જિસને અપનાપન ખોયા ઉસને સબ ખોયા.
૧૦-૧૨-૪૪
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

जिसने अपनापन खोया उसने सब
खोया।

१०-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

सीधा रास्ता जैसा सरल है ऐसा ही कठिन है. ऐसा न होता तो सब सीधा रास्ता ही लेते.

२१-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम सबको सन्मति दे भगवान

बापुके आशीर्वाद

सीधा रास्ता जैसा सरल है ऐसा ही कठिन है। ऐसा न होता तो सब सीधा रास्ता ही लेते।

११-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

"दया धरमका मूल है" ऐसा तुलसीदासजीने कहा है और कहते हैं "तुलसी दया न छांडीये जब लग घट में प्रान." हम सब दया को भूलकर कैसे दया करें, और किस पर?

१२-१२-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम सबको सन्मति दे भगवान

"दया धर्म का मूल है"—ऐसा तुलसीदास जी ने कहा है और कहते हैं: "तुलसी दया न छांड़िये जब लग घट में प्रान।" हम सब दया के भिक्षुक कैसे दया करें, और किस पर ?

१२-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम   पतित पावन सीताराम

ॐ हे राम

एक बहन ने कहा "मैं प्रार्थना करती थी अब छोड़ दी है।" मैंने पूछा 'क्यों?' उन्होंने उत्तर दिया "क्योंकि मैं दिखावा मानती थी।" उत्तर तो ठीक ही है लेकिन दिखावा छोड़ना चाहिये, प्रार्थना क्यों छोड़े!

१३-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम   बापुके आशीर्वाद   सबको सन्मति दे भगवान

एक बहन ने कहा : "मैं प्रार्थना करती थी, अब छोड़ दी है ।" मैंने पूछा : "क्यों ?" उसने उत्तर दिया : "क्योंकि मैं दिल को धोका देती थी ।" उत्तर तो ठीक ही है लेकिन धोका देना छोड़े, प्रार्थना क्यों छोड़े ?

१३-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम
हे राम
पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम   ॐ राम   पतित पावन सीताराम

कल का भजन बहुत मीठा और मननीय था। उसका सार यह है। भगवान् न मंदिर में है, न मस्जीद में; न भीतर है न बाहर; कहीं है तो दीन जनों की भूख और प्यास में है। चलो, हम उनकी भूख और प्यास मिटाने के लिये नित्य कातें या ऐसी जात मेहनत उनके निमित्त रामनाम लेकर करें।

101969   १४-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम   बापुके आशीर्वाद   सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम — हे राम — पतित पावन सीताराम

क्या बात है कि हम सामान्यतया भी झूठ से नहीं बचते भले वह शर्म या डर के मारे क्यों न हो। क्या अच्छा यह नहीं होगा कि हम मौन ही धारण करें या आपस २ में निडर होकर जैसा हमारे दिल में है वैसा ही कहें ?

१५-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
सबको सन्मति दे भगवान

थोड़ा सा झूठ भी मनुष्य का
नाश करता है जैसे दूध को एक
बूंद ज़हर भी।

१६-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम

पतित पावन सीताराम

ॐ राम

सही चीज़को पीछे धकेलना इनको रखना है, निकम्मीको पीछे खुशर हटाते हैं और खुशामदते हैं!!!

१७-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

सही चीज़ के पीछे वक्त देना हमको
खटकता है, निक्कमी के पीछे ख्वार होते
हैं और खुश होते हैं !!!

१७-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापु के आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

"आदमको खुदा न बनाओ, आदम खुदा नहीं लेकिन खुदा के नूर से आदम जुदा नहीं."

१८-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापू के आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

"आदम को ख़ुदा मत कहो, आदम ख़ुदा नहीं; लेकिन ख़ुदा के नूर से आदम जुदा नहीं।"

१८-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

संतोंकी वाणी सुनी, शास्त्र पढ़े, विद्वान हो गये, लेकिन अगर ईश्वरको हृदयमें स्थान नहीं दिया तो कुछ नहीं किया.

१९-१२-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

संतों की वाणी सुनो, शास्त्र पढ़ो, विद्वान हो लो, लेकिन अगर ईश्वर को हृदय में स्थान नहीं दिया तो कुछ नहीं किया ।

१९-१२-४४

पूर्ण तो हम ~~[illegible]~~ राज चाहते हैं लेकिन
इसका अर्थ ठीक हम शायद नहीं जानते हैं.
एक अर्थ तो यह है कि राज्य भार से छुटकारा
पाना.

२०-१२-४४

मुक्ति तो हम सब चाहते हैं, लेकिन उसका
अर्थ ठीक २ हम शायद नहीं जानते हैं।
एक अर्थ तो यह है कि जन्म मरण से
छुटकारा पाना।

२०-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
सबको सन्मति दे भगवान

भक्त-कवि नरसैंयो कहते हैं : "हरिना जन तो मुक्ति न मांगे, मांगे जनमोजनम अवतार रे।" इस दृष्टि से देखें तो 'मुक्ति' कुछ और रूप लेती है।

२१-१२-४४

अनासक्तिकी पराकाष्ठा गीताकी मुक्ति है और वही अर्थ हम ईशोपनिषद्के पहले मंत्र में पाते हैं।

२२-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

अनासक्ति की पराकाष्टा गीता की मुक्ति
है और वही अर्थ हम ईशोपनिषत् के
पहले मंत्र में पाते हैं।

२२-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम ॐ हे राम पतित पावन सीताराम

अनासक्ति कौनसी बात है? सुख और दुःख, दोस्त और दुश्मन, हमारा और दूसरोंका — सब समान समझनेकी शक्ति रखती है. इसीको अनासक्ति का दूसरा नाम कहा जाता है.

२३-११-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

अनासक्ति कैसे बढ़े ? सुख और दुःख, दोस्त और दुश्मन, हमारा और दूसरों का—सब समान समझने से अनासक्ति बढ़ती है। इसलिये अनासक्ति का दूसरा नाम समभाव है।

२३-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

जैसे बिंदु का समुदाय समुद्र है, इसी तरह हम मैत्री करके मैत्री का सागर बन सकते हैं। और जगत् में सब एक दूसरों से मित्र भाव से रहें तो जगत् का रूप बदल जाय।

२४-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम
ॐ राम
पतित पावन सीताराम
আজ খ্রিস্টমস দিন হৈ। হম জো সব ধর্মোঁকী
সমানতা মানতে হৈঁ উনকে লিয়ে ঈসা মসীহকা
জন্ম দিন উতনাহী মাননীয় হৈ জৈসা রামকৃষ্ণাদিকা।
২৫-১২-৪৭
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

आज क्रिसमस दिन है। हम जो सब धर्मों की समानता मानते हैं, उनके लिये ईसा मसीह का जन्म ऐसा ही माननीय है जैसा राम कृष्णादि का।

२५-१२-४४

बीमारी मात्र मनुष्यके लिये शरमकी बात होनी चाहिये. बीमारी किसी भी दोषकी सूचक है. जिसका तन और मन सर्वथा स्वस्थ है उसे बीमारी होनी नहीं चाहिये.

२५-१२-४४

बीमारी मात्र मनुष्य के लिये शर्म की बात होनी चाहिये । बीमारी किसी भी दोष की सूचक है । जिसका तन और मन सर्वथा स्वस्थ है, उसे बीमारी होनी नहीं चाहिये ।

२६-१२-४४

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

विकारी विचार भी बीमारी की
निशानी है. इसलिये हम सब विकारी
विचार से बचते रहें.

२७-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापु के आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

विकारी विचार भी बीमारी की निशानी है। इसलिये हम सब विकारी विचार से बचते रहें।

२७–१२–४४

रघुपति राघव राजाराम ॐ हे राम पतित पावन सीताराम

विकारी विचारसे बचनेका एक अमोघ उपाय - रामनाम - है. नाम कंठसे ही नहीं किंतु हृदयसे निकलना चाहीये.

२८-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

विकारी विचार से बचने का एक अमोघ
उपाय—रामनाम—है। नाम कंठ से ही
नहीं, किंतु हृदय से निकलना चाहिये।

२८-१२-४४

व्याधि अनेक हैं, वैद्य अनेक हैं, उपचार भी अनेक हैं। अगर व्याधि को एक ही देखें और उसको मिटानेहारा वैद्य एक राम ही है ऐसा समझें तो बहुत सी झंझटों से हम बच जायें।

२९-११-४७

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

व्याधि अनेक हैं, वैद्य अनेक हैं, उपचार भी अनेक हैं। अगर व्याधि को एक ही देखें और उसको मिटानेहारा वैद्य एक राम ही है ऐसा समझें, तो बहुत सी झंझटों से हम बच जाँय।

२९-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम — ॐ हे राम — पतित पावन सीताराम

आश्चर्य है वैद्य मरते हैं, डाक्टर मरते हैं. उनके पीछे हम भटकते हैं. लेकिन राम जो मरता नहीं है, हमेशा ज़िंदा रहता है और अचूक वैद्य है उसे हम भूल जाते हैं.

२०-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

आश्चर्य है वैद्य मरते हैं, डाक्टर मरते हैं, उनके पीछे हम भटकते हैं। लेकिन राम जो मरता नहीं है, हमेशा ज़िंदा रहता है और अचूक वैद्य है उसे हम भूल जाते हैं।

३०-१२-४४

ॐ हे राम

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

इससे भी आश्चर्य यह है कि हम जानते हैं कि हम भी मरनेवाले तो हैं ही, बहुत कहें तो वैद्यादि की दवाएं शायद हम थोड़े दिन और काट सकते हैं और इस लिये रद्दबदल करते हैं.

२१-१२-४४

ईश्वर अल्ला तेरे नाम सबको सन्मति दे भगवान

बापुके आशीर्वाद

इस से भी आश्चर्य यह है कि हम जानते
हैं कि हम भी मरने वाले तो हैं ही, बहुत
करें तो वैद्यादि की दवा से शायद हम
थोड़े दिन और काट सकते हैं और इस
लिये ख़्वार होते हैं।

३१-१२-४४

ॐ
हे राम

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

इसी तरह बूढ़े, बच्चे, जवान, धनिक, गरीब, सबको मरते हुए पाते हैं तो भी संतोषसे बैठना नहीं चाहते हैं, लेकिन थोड़े दिन जीनेके लिये रामको छोड़ सब प्रयत्न करते हैं.

२-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

इसी तरह बूढ़े, बच्चे, जवान, धनिक, ग़रीब, सब को मरते हुए पाते हैं तो भी संतोष से बैठना नहीं चाहते हैं, लेकिन थोड़े दिन जीने के लिये राम को छोड़ सब प्रयत्न करते हैं।

१–१–४५

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
कैसा अच्छा हो कि इसका समझकर
इन सब झगडोंसे दूर करना चाहिये आप
उनकी भी बरदास्त करें और ~~आगे~~ अपना
जीवन आनंदमय बनाकर व्यतीत करें.
२-१-४८
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

कैसा अच्छा हो कि इतना समझ कर हम राम भरोसे रह कर जो व्याधि आवे उसकी भी बरदाश्त करें और अपना जीवन आनंदमय बनाकर व्यतीत करें !

२-१-४५

रघुपति राघव राजाराम ॐ पतित पावन सीताराम

शरीरधारी महादेव को शरीर से और
उसके लेखों से ही हम देखते थे। यह
एक ही बात हुई। देहातीत महादेव सर्व-
व्यापी है और उसके गुणों से हम उसको
पहचान सकते हैं और इस में सब एकसा
शरीक हो सकते हैं। किसी को ज़्यादा
कम विभाग नहीं मिल सकता है।

३-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

जन्म और मरण शायद एक ही
सिक्केकी दो बाजू नहीं हैं? एक
तरफ देखो तो मरण और दूसरी
तरफ़ जन्म. इसमें दुःख क्यों? हर्ष क्यों?

४-२-४५

जन्म और मरण शायद एक ही सिक्के
की दो बाजू नहीं हैं ? एक तरफ़ देखो
तो मरण और दूसरी तरफ़ जन्म।
इस से दुःख क्यों ? हर्ष क्यों ?

४-१-४५

जो जन्म मरण की बात सही होय तो और है, तो हम क्यों मृत्यु से ज़रा भी डरें, दुखी हों, और जन्म से खुश हों ? प्रत्येक मनुष्य यह सवाल अपने साथ करे ।

५-१-४५

रघुपति राघव राजाराम ॐ हे राम पतित पावन सीताराम

जगत द्वंद्व से भरपूर है. सुख के पीछे दुःख रहा है, दुःख के पीछे सुख, धूप है तो छाया भी है, प्रकाश है तो अंधेरा भी, जन्म है तो मृत्यु भी. इस द्वंद्वसे छूटना, आना शक्ति है. द्वंद्व को जीतने का उपाय द्वंद्व को मिटाना नहीं है, लेकिन द्वंद्वातीत, अनासक्त होना है.

६-७-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापु के आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम   हे राम   पतित पावन सीताराम

जगत् द्वंन्द से भरपूर है। सुख के पीछे दुःख रहा है, दुःख के पीछे सुख। धूप है तो छाया भी हैं, प्रकाश है तो अंधेरा भी, जन्म है तो मृत्यु भी। इस द्वंन्द से हटना अनासक्ति है। द्वंन्द को जीतने का उपाय द्वंन्द को मिटाना नहीं है, लेकिन द्वंन्दातीत्, अनासक्त होना है।

६-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम   बापुके आशीर्वाद   सबको सन्मति दे भगवान

पढ़ थी हे का बताता हूँ कि सब की कुंजी सत्य की आराधना में है। सत्य की उपासना से सब चीज मिलती है।

७-१-४८

यह पीछे का बताता है कि सब की कूंजी
सत्य की आराधना में है। सत्य की
उपासना से सब चीज़ मिलती है।

७-१-४५

तब सत्यकी आराधना कैसे हो? सत्य कौन जानता है? यहां सापेक्ष सत्यकी बात है. जिसे हम सत्य समझें वह सत्य. इतना सत्य भी बहुत कठिन है ऐसा अनुभवसे प्रतीत होगा.

८-१-४५

तब सत्य की आराधना कैसे हो ? सत्य कौन जानता है ? यहां सापेक्ष सत्य की बात है। जिसे हम सत्य रूप से देखें वह सत्य। इतना सत्य भी बहुत कठिन है ऐसा अनुभव से प्रतीत होगा।

८-१-४५

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

सब सत्यकी आराधना कैसे करें? सत्य
कौन जानता है? यहां सापेक्ष सत्यकी
बात है. जिसे हम सत्यरूप मानें वह सत्य.
इतना सत्य भी बहुत कठिन है ऐसा
अनुभवकी प्रतीति होगी।।

८-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

तब सत्य की आराधना कैसे हो ? सत्य कौन जानता है ? यहां सापेक्ष सत्य की बात है । जिसे हम सत्य रूप से देखें वह सत्य । इतना सत्य भी बहुत कठिन है ऐसा अनुभव से प्रतीत होगा ।

८-१-४५

रघुपति राघव राजाराम — हे राम — पतित पावन सीताराम

मानता हूं कि आदमी सच कहनेसे क्यों
डर सकता है? डर किसका है? किसकी हानि?
उपर है तो क्या? नौकर हूं तो क्या? बात
यह है कि आदत आदमीको दबा जाती है.
हम इससे और सभी आदतसे छूट जांय.
९-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

जानता हुआ आदमी सत्य कहने से क्यों झीझकता है ? शर्म के मारे ? किसकी शर्म ? ऊपरी है तो क्या ? नौकर है तो क्या ? बात यह है कि आदत आदमी को खा जाती है। हम सोचें और बुरी आदत से छूट जाँय।

९-१-४५

छूटें नहीं तो सत्य के रासते पर नहीं जा सकते हैं। बात यह है कि सत्य के लिये सब कुछ कुरबान करें। हम हैं ऐसा दीखना नहीं चाहते, लेकिन हैं उससे बेहतर दीखना चाहते हैं। कैसा अच्छा हो अगर हम नीच हैं तो नीच दीखें, अगर ऊंच होना चाहें तो ऊंच काम करें, ऊंच विचारें! ऐसा न हो सके तो भले नीच ही दीखें। कोई रोज़ तब ऊंचे जाँयगे।

१०-१-४५

रघुपति राघव राजाराम — पतित पावन सीताराम

मैं जो अनुभव करता हूं, चाहता हूं कि आप भी अपने
आप अपने हृदयमें [illegible]

११-९-४७

बापूके आशीर्वाद

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
हे राम
पतित पावन सीताराम
जैसे अनुभव लेता हूं, पाता हूं कि
आदमी अपने आप अपने सुख दुःख का
कारण है।
११-१-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
ॐ श्री राम
पतित पावन सीताराम
ऐसा होते हुए आदमी सुखी दुःखी क्यों होता है!
२२-१-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

ऐसा होते हुए आदमी सुखी दुःखी क्यों
होता है ?

१२-१-४५

बात यह है कि आप भी उनसे विवाह करना नहीं चाहता इसलिये चलता है इसमें विचार करनेकी फुरसत ही नहीं है।

१३-१-४५

बात यह है कि आदमी ऐसे विचार
करना नहीं चाहता। इसलिये मानता है
ऐसे विचार करने की फ़ुरसत ही नहीं है।

१३-१-४५

अगर हम सच्चा जीवन व्यतीत करना
चाहते हैं तो नागरिक [illegible]
[illegible] कर हमें नीति का विचार करना
होगा. परिणाम यह होगा कि हमारा
जीवन बहुत सरल हो जायगा.

१४-१-२५

रघुपति राघव राजाराम ॐ हे राम पतित पावन सीताराम

अगर हम सच्चा जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो मानसिक आलस्य छोड़ कर हमें मौलिक विचार करना होगा। परिणाम यह होगा कि हमारा जीवन बहुत सरल हो जायगा।

१४-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम — पतित पावन सीताराम

ज्ञानीने हमें मुसाफिर कहा है. बात सच्ची है. हम यहां तो चंद रोज़के लिये हैं. बादमें 'मरते' नहीं, अपने घर जाते हैं. कैसा अच्छा, और सच्चा रहस्य है?

१६-५-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

ज्ञानी ने हमें मुसाफ़िर कहा है। बात सच्ची है। हम यहां तो चंद रोज़ के लिये हैं। बाद में 'मरते' नहीं, अपने घर जाते हैं। कैसा अच्छा और सच्चा ख़्याल!

१५-१-४५

बापुके आशीर्वाद

हजारों मण कचरा कड़े परिश्रम से
निकालते हैं तब कोई हीरा हाथ में
आता है, क्या हम इस परिश्रम का
थोड़ा हिस्सा भी कचरा रूप दुर्गुण निकालने
में और हीरा रूप सत्य ढूंढने में देते हैं?

१६-१-४५

हज़ारों मण कचरा बड़े परिश्रम से निकालते हैं तब कोई हीरा हाथों में आता है। क्या हम इस परिश्रम का थोड़ा हिस्सा भी कचरा रूप झूठ निकालने में और हीरा रूप सत्य ढूंढ़ने में देते हैं ?

१६-१-४५

रघुपति राघव राजाराम
ॐ हे राम
पतित पावन सीताराम
बगैर परिश्रमसे याने बगैर यत्नके
कुछभी हो नहीं सकता है तो आत्म-
शुद्धि कैसे हो सकती?
६-१-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

बग़ैर परिश्रम से, यानि बग़ैर तप के, कुछ भी हो नहीं सकता है, तो आत्म-शोध कैसे हो सके ?

१७–१–४५

अगर सब समय भगवान् का है तो हम
एक क्षण भी निक्कमी क्यों जाने दें ?
अगर हम भगवान् के हैं तो हमारे शरीर
का एक हिस्सा भी मौज शौक़ में क्यों दें ?

१८-१-४५

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

अनासक्त कार्य शक्तिप्रद है क्योंकि
अनासक्त कार्य भगवान् भक्ति है.
१९-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

अनासक्त कार्य शक्तिप्रद है, क्योंकि
अनासक्त कार्य भगवान् भक्ति है।

१९-१-४५

रघुपति राघव राजाराम
ॐ हे राम
पतित पावन सीताराम
२०-९-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

जमशेद मेहता ने आसीसी के फ़्रान्सिस की एक प्रार्थना भेजी है। उस में यह हिस्सा है : "हे भगवान्, किसी को देने से ही हमें मिलता है, मरने से ही हम अमर पद पा सकते हैं।"

२०-१-४५

गरीबका मालिक तो वही है जो उसपर महेरबानी करता है.

२१-१-४५

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
No.
ज़मीन का मालिक तो वही है जो उस पर
मेहनत करता है ।
२१-१-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
ॐ
पतित पावन सीताराम
जो कुछ भीतरमें स्वच्छ है वह
बाहरमें अस्वच्छ हो ही नहीं सकता.
२२-१-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
ॐ
१ राम
पतित पावन सीताराम
जो सचमुच भीतर में स्वच्छ है वह बाहर
में अस्वच्छ हो ही नहीं सकता।
२२-१-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम ॐ रामा पतित पावन सीताराम

सच्चा कार्य कभी निष्फल नहीं होता,
सच्चा प्रयत्न अंत में कभी असफल नहीं होता।
२६-१-४६

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

सच्चा कार्य कभी निक्कमा नहीं होता,
सच्चा वचन अंत में कभी अप्रिय नहीं होता।

२३-१-४५

रघुपति राघव राजाराम
ॐ राम
पतित पावन सीताराम
शुद्ध हृदयसे निकला हुआ वचन कभी
निष्फल नहीं होता.
२४-७-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

शुद्ध हृदय से निकला हुआ वचन कभी
निष्फल नहीं होता।

२४-१-४५

आलस्यमें हमें दुःख होगा तो हम आलसी नहीं रहेंगे. ऐसे ही यदी हमें व्यभिचारमें दुःख होगा तो व्यभिचारी नहीं बनेंगे, नहीं रहेंगे.

२५-१-४५

आलस्य से हमें दुःख होगा तो हम आलसी
नहीं रहेंगे। ऐसे ही यदी हमें व्यभिचार
से दुःख होगा तो व्यभिचारी नहीं बनेंगे,
नहीं रहेंगे।

२५-१-४५

रघुपति राघव राजाराम
हे राम
पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

प्रथम काम, बाद में मिले तो, दाम जितना काम। यह तो हुई परमात्मा की सेवा। अगर दाम पहले मांगोगे तो वह हुई शैतान की सेवा।

स्वतंत्रता दिन
२६–१–४५

रघुपति राघव राजाराम
ॐ हे राम
पतित पावन सीताराम
কামনাকো সংতুষ্ট নহীঁ করনা অচ্ছা হৈ.
লেকিন সংতুষ্ট করনে কে বাদ উসে ত্যাগনা
অসংভব নহীঁ তো কঠিন তো হৈ হী.
২০-৯-৪৫
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

कामना को संतुष्ट नहीं करना अच्छा है ।
लेकिन शुरू करने के बाद उसे रोकना
असंभव नहीं तो कठिन तो है ही ।

२७–१–४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
जो मनुष्य अपने पर काबु नहीं रख सकता है वह दूसरों पर कभी भी काबु नहीं रख सकता. २८-१-४८
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

जो मनुष्य अपने पर काबू नहीं रख
सकता है वह दूसरों पर कभी सच्चा
काबू नहीं रख सकता।

२८-१-४५

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

अपनेको पहचानने के लिये मनुष्यको अपनेसे बाहर निकल
कर तटस्थ बन कर अपने को देखना है.
२९-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

अपने को पहचानने के लिये मनुष्य को
अपने से बाहर निकल कर तटस्थ बन
कर अपने को देखना है।

२९-१-४५

रघुपति राघव राजाराम — ॐ राम — पतित पावन सीताराम

जो मनुष्य किसीका भी बोझ हलका करता है वह निकम्मा नहीं है.

१०-९-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
ॐ रामे राम
पतित पावन सीताराम
जो मनुष्य किसी का भी बोझ हलका
करता है वह निक्कमा नहीं है।
३०–१–४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

ॐ राम

रघुपति राघव राजाराम — पतित पावन सीताराम

जिसे हम सही और शुभ माने वही करने में हमारा सुख है, हमारी शांति है, नहीं कि जो दूसरे करें या कहे उसे करने में.

२२-१-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

जिसे हम सही और शुभ मानें वही करने
में हमारा सुख है, हमारी शांति है, नहीं
कि जो दूसरे कहें या करें उसे करने में।

३१-१-४५

ॐ राम

रघुपति राघव राजाराम   पतित पावन सीताराम

पुस्तक वांचन से शक्ति तो आती है लेकिन
बिना आचरण के ही वस्तु बनता नहीं सकती.
२-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम   बापुके आशीर्वाद   सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
हे राम
पतित पावन सीताराम
पुस्त वांचन से शक्ति तो आती है
लेकिन बिना ज्ञान के सही स्वतंत्रता
नहीं मिलती।
१-२-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम ॐ पतित पावन सीताराम

किसीकी महरबानी मांगना अपनी
आझादी बेचना है.

२-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
हे राम
पतित पावन सीताराम
किसी की मेहरबानी मांगना अपनी
आज़ादी बेचना है।
२–२–४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

मनुष्य की प्रतिष्ठा उस के दिल में—
हृदय में है, नहीं कि उसके मस्तिष्क में,
यानि बुद्धि में।

३–२–४५

रघुपति राघव राजाराम

हे राम

पतित पावन सीताराम

धर्म वह है जो सब धारण करता है यानि सब किसको एक समय जीवन में आगे प्रोत है.

९-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
ॐ
१५५
पतित पावन सीताराम
१०५
धर्म वह है जो सब धारण करता है,
यानि सब हिस्से में सब समय जीवन में
ओतप्रोत है।
४-२-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम — हे राम — पतित पावन सीताराम

धर्म कुछ जीवन से भिन्न नहीं है, जीवन ही धर्म माना जाय. बगैर धर्म का जीवन मनुष्य जीवन नहीं है, वह पशु जीवन है.

५-२-४६

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

धर्म कुछ जीवन से भिन्न नहीं है, जीवन ही धर्म माना जाय। बग़ैर धर्म का जीवन मनुष्य जीवन नहीं है, वह पशु जीवन है।

५-२-४५

रघुपति राघव राजाराम — ॐ हे राम — पतित पावन सीताराम

जो ज्यादा कालखपाते हैं या ज्यादा काम करते हैं वे कमसेकम बोलते हैं। दोनों साथ मिलते ही नहीं। ईश्वर कुदरत सबसे ज्यादा काम करती है, सोती नहीं, लेकिन मूक है।

६-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

जो ज़्यादा काबू पाते हैं या ज़्यादा काम करते हैं, वे कम से कम बोलते हैं। दोनों साथ मिलते ही नहीं। देखो, क़ुदरत सब से ज़्यादा काम करती है, सोती नहीं, लेकिन मूक है।

६-२-४५

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

जो दुःखीओं का ही ध्यान करता है वह अपना ध्यान नहीं करता, उसको इतना समय कहां(से)

७-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम सबको सन्मति दे भगवान

बापुके आशीर्वाद

जो दु:खीओं का ही ख्याल करता है वह
अपना ख्याल नहीं करेगा, उसको इतना
समय कहां से ?

७-२-४५

जो मनुष्य जो देखना चाहता है वही देखेगा, सुनना चाहता है वही सुनेगा। जैसे माली बग़ीचे में फूल को ही देखेगा, फ़िलसुफ़ को पता भी नहीं लगेगा बग़ीचे में क्या है। (वह) बग़ीचे के बाहर है या भीतर उसका भी पता उसे शायद नहीं होगा।

८-२-४५

जिन के साथ हमारा सहवास है उनसे अपनी त्रुटियां देख सकते हैं और सुधार भी सकते हैं। बेहतर है कि हम रोज़ के व्यवहार को शुद्धतम रखें तो सच्चे सेवक बनने की आशा रख सकते हैं।

९-२-४५

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

ॐ राम

सत्यके व्रतकी शुद्ध निशानी है की सत्याग्रही मौनका
सेवन करे. ऐसे होते हुए भी हम पाते हैं कि बहुत
सत्याग्रही बहुत बातें करते हैं. कारण स्पष्ट है—आदत.
इन इस आदतको छोडें.

२०-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम — हे राम — पतित पावन सीताराम

सत्य के व्रत की शुद्ध निशानी है कि सत्यार्थी मौन का सेवन करे। ऐसे होते हुए भी हम पाते हैं कि बहुत सत्यार्थी बहुत बातें करते हैं। कारण स्पष्ट है—आदत। हम इस आदत को छोड़ें।

१०-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

मृत प्रियजन का स्मरण कैसे करें? मेरा दृढ़ विश्वास है कि वे मरते नहीं, शरीर मरता है। लेकिन स्मरण तो क़ायम रखना ही है, उनके सब गुण हमारे में यथाशक्ति उतार कर, उनकी शुभ प्रवृत्ति अपनाकर और उसमें वृद्धि कर कर। समाधि पर फूलादि रखना उसी स्मरण को बड़ाने के लिये है। अगर फूलों से ही संतुष्ट रहें तो उसे मैं मूर्ती-पूजा कहुंगा।

११-२-४५

रघुपति राघव राजाराम — ॐ हे राम — पतित पावन सीताराम

यह कितनी गलत बात है कि हम मैले रहें
और दूसरों को साफ रहने की सलाह दें?

१२-२-४८

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

यह कितनी ग़लत बात है कि हम मैले रहें और दूसरों को साफ़ रहने की सलाह दें !

१२-२-४५

रघुपति राघव राजाराम
ॐ हे राम
पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

दूसरे और हमारे में, सारे जगत् में जो भेद है वह अंश का या दरजों का ही है, जाति का कभी नहीं, जैसे एक ही जाति के वृक्षों में होता है। इस में क्रोध क्या, द्वेश क्या, भेद क्या?

१३-२-४५

रघुपति राघव राजाराम — पतित पावन सीताराम

કોઈ શુભ નિશ્ચયથી મનુષ્ય જો કાર્ય કે જીવન
વિચાર પૂર્વક કરે તો ઉત્તમ આનંદ થાય.

૨૪-૨-૪૬

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

कोई शुभ निश्चय भी मनुष्य भले न करे लेकिन विचार पूर्वक करे तो उसे कभी न छोड़े।

१४-२-४५

आदमी को अपने को धोखा देने की
शक्ति इतनी है कि वह दूसरों को धोखा
देने की शक्ति से बहुत अधिक है। इसका ख्याल
प्रत्येक मानवी हरेक क्षण में रखना चाहिये।
१५-२-४६

आदमी को अपने को धोखा देने की शक्ति इतनी है कि वह दूसरों को धोखा देने की शक्ति से बहुत अधिक है। इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण हरेक समझदार आदमी है।

१५-२-४५

रघुपति राघव राजाराम — ॐ राम — पतित पावन सीताराम

जो गुस्सा भजन पर होता है उसे दबा रखने में जय है. भजन पर गुस्सा दबाने के लिये हम मजबूर से जाते हैं. उसमें जय कैसी?

२६-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम — पतित पावन सीताराम

ॐ

जो गुस्सा स्वजन पर होता है उसे रोकने में जप है। परजन पर गुस्सा रोकने के लिये हम मजबूर हो जाते हैं। उस में जप कैसे ?

१६–२–४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम — ॐ राम — पतित पावन सीताराम

रोजा माने भोजन करना–खाना पीना छूटना–नहीं, लेकिन ईश्वर की स्तुति करना अर्थात मानवजाति की सच्ची सेवा करना.

१७-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

जीना मानी मौज करना——खाना, पीना, कूदना——नहीं, लेकिन ईश्वर की स्तुति करना अर्थात् मानव जाति की सच्ची सेवा करना ।

१७–२–४५

रघुपति राघव राजाराम

ॐ राम

पतित पावन सीताराम

मनुष्यजीवन और पशुजीवनमें फरक क्या है? इसका संपूर्ण विचार करनेसे हमारी काफी मुश्किलें हल होती हैं।

१८-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
हे राम
पतित पावन सीताराम
मनुष्य जीवन और पशु जीवन में फ़रक क्या है ? इसका संपूर्ण विचार करने से हमारी काफ़ी मुसीबतें हल होती हैं।
१८-२-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान.

मनुष्य जब अपनी हदसे बाहर जाता है,
हदसे बाहर काम करता है, विचार भी
करता है तब उसे व्याधि होता रहता है।
व्याधि आ पकडता है। ऐसा जब हद बाहर जाती
निकली है, उसका इलाज भी कर सकता है।

१८-२-४५

मनुष्य जब अपनी हद से बाहर जाता है, हद से बाहर काम करता है, विचार भी करता है, तब उसे व्याधि हो सकती है, क्रोध आ सकता है। ऐसी जल्दबाज़ी निक्कमी है, नुक़सान भी कर सकती है।

१९-२-४५

रघुपति राघव राजाराम
ॐ
पतित पावन सीताराम
आज प्रातःकाल के भजन में था ईश्वर
हम को कभी नहीं भूलता, हम भूलते हैं
वही सच्चा दुःख ।
२०-२-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापु के आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

जब ईश्वर नहीं बचाना चाहता, तब न धन बचा सकता, न मातपिता, न बड़ा डाक्टर!!! तब हमें क्या करना चाहीये?

२१-२-४७

जब ईश्वर नहीं बचाना चाहता, तब न धन बचायगा, न मातपिता, न बड़ा डाक्टर !!! तब हमें क्या करना चाहिये ?

२१-२-४५

रघुपति राघव राजाराम

पतित पावन सीताराम

૨૨-૨-૪૫

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

हमारी गंदगी हमने जब नहीं निकाली है,
तब तक प्रार्थना करने का हमें कुछ हक़
है क्या ?

२२-२-४५

माला जो उस संतने फिराई है, वह तुलसी या सुखड़ की है, रुद्राक्ष है, लेकिन फेरनेवाला यदि माला में ही सर्वस्व है ऐसा मानता है तो उसे फेंक दे; यदि माला उसको परमात्मा को नजदीक ले जाती है, उसके कर्तव्य में सावधान करती है तो उसे उस विधिवत् जो और फिरावे.

वर्धा २३-२-४६

माला लें, उसे संत ने फिराई है, वह तुलसी या सुखड की है, रुद्राक्ष हो, लेकिन फेरनेवाला यदी माला में ही सर्वस्व है ऐसा मानता है तो उसे फेंक दे। यदी माला उसको परमात्मा के नज़दिक ले जाती है, अपने कर्तव्य में सावधान करती है, तो भले उसे विधिवत ले और फिरावे।

वर्धा : २३-२-४५

रघुपति राघव राजाराम

पतित पावन सीताराम

हम हैं बन्दों की ईश्वर है। इसीसे हम कहते हैं कि मनुष्य मात्र, जीव मात्र, ईश्वर का अंश है।

28-2-45

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

हम हैं क्योंकि ईश्वर है। इसी से हम
देखते हैं कि मनुष्य मात्र, जीव मात्र,
ईश्वर का अंश है।

२४-२-४५

रघुपति राघव राजाराम ॐ हे राम पतित पावन सीताराम

नमस्कार में एक चमत्कार है: तेरे हिसाबसे न चिंता रहे न दू किसीका न रहे। यह वचन उनके लिये है जो परमात्माको जानता है।

२५-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

नये करार[1] में एक यह वाक्य है : "तेरे दिल में न चिंता रहे, न तू किसी का भय रखे।" यह वचन उसके लिये है जो परमात्मा को मानता है।

२५-२-४५

[1] *The New Testament*

वही नया करार कहता है कि अगर ईश्वर
हमें लालच में डालता है, तो उसमें से
बच जाने का रास्ता भी वही बताता है।
यह बात सही उन्हीं के लिये है जो अपने
आप लालच में फंसते नहीं।

२६-२-४५

रघुपति राघव राजाराम
ॐ हे राम
पतित पावन सीताराम

नामकी महीमा सिर्फ तुलसीदासने ही गाई है ऐसा नहीं है. बाईबलमें भी पाता हुं. दसवें रोमनके १३ श्लोकमें कहते हैं जो कोई ईश्वरका नाम लेगा वो मुक्त होजायगा.

२७-२-४६

ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

नाम की महीमा सिर्फ़ तुलसीदास ने ही
गाई है ऐसा नहीं है । बाईबल में मैं
वही पाता हूं । दसवें रोमन के १३
कलम में कहते हैं जो कोई ईश्वर का
नाम लेंगे वे मुक्त हो जायंगे[1] ।

२७-२-४५

[1] "For whosoever shall call upon the name of the Lord shall be saved."—*The New Testament* (Romans 10 : 13.)

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
गुनाह छिपा नहीं रहता। वह मनुष्य के मुख पर लिखा रहता है। उस शास्त्र को हम पूरे तोर से नहीं जानते, लेकिन बात साफ़ है।
२८-२-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

आजकल बाईबल के फ़िक्रे पढ़ रहा हूं। आज यह देखता हूं: "श्रद्धा से जो कुछ तुम मांगोगे, तुम्हें मिलेगा।"[1]
(मेथी २१–२२)

१–३–४५

[1] "And all things, whatsoever ye shall ask in prayer, believing, ye shall receive."—*The New Testament* (St. Matthew 21 : 22.)

'निर्बल के बल राम' का जबूर [?] भजन ३४.१८ में है. जो टूटदिला है उसके नजदीक परमात्मा है ही और जिसको सच्चा पश्चात्ताप हुआ है उसे बचा लेता है.

२-३-४७

'निर्बल के बल राम' के जैसा ही साम ३४–१८ में है। जो टूट गया है उसके नज़दीक परमात्मा है ही, और जिस को सच्चा पश्चाताप हुआ है उसे बचा लेता है।[1]

२–३–४५

[1] "The Lord *is* nigh unto them that are of a broken heart; and saveth such as be of a contrite spirit."—*The Old Testament* (Psalm 34 : 18)

रघुपति राघव राजाराम

पतित पावन सीताराम

आइजाया ४१-१० में कहता है डरो नहीं
क्योंकि परमात्मा तुम्हारे पास ही है।

३-३-४६

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

आइलामा ४१-१० में कहती है : डरो नहीं, क्योंकि परमात्मा तुम्हारे पास ही है।[1]

३-३-४५

[1] "Fear thou not; for I *am* with thee."—*The Old Testament* (Isaiah 41 : 10)

रघुपति राघव राजाराम — पतित पावन सीताराम

एक ईश्वर में ही संपूर्ण शक्ति है। इसलिये
ईश्वर में ही हमेशा के लिये विश्वास
रखा जाय, इनसान पर कभी नहीं।[1]
(इसाया २६–४ से)

४–३–४५

[1] "Trust ye in the Lord for ever: for in the Lord Jehovah *is* everlasting strength."—*The Old Testament* (Isaiah 26 : 4)

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

पानी का स्वभाव नीचे जानेका है।
इसी तरह दुर्गुण नीचे ले जाता है
इसलिये बहुत सावधानी चाहिये।
सद्गुण ऊंचे ले जाता है इसलिये
उसको अपनाना है।

२-३-४७

पानी का स्वभाव नीचे जाने का है। इसी तरह दुर्गुण नीचे ले जाता है, इसलिये सहल होना ही चाहिये। सद्गुण ऊंचे ले जाता है, इसलिये मुश्किल सा लगता है।

५-३-४५

रघुपति राघव राजाराम

ॐ हे राम

पतित पावन सीताराम

मेरी कृपा तेरे लिये काफी होनी चाहिये
क्योंकि मेरा बल दुर्बलता में ही पूर्ण होता है।
(२ कोरि १२-९)
६-२-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

"मेरी कृपा तेरे लिये काफ़ी होनी चाहिये, क्योंकि मेरा बल दुर्बलता में ही पूर्ण होता है।"[1] (२ कोर :-१२-९)

६-३-४५

[1] "My grace is sufficient for thee: for my strength is made perfect in weakness."—*The New Testament* (2 Corinthians 12 : 9)

रघुपति राघव राजाराम | ॐ हे राम | पतित पावन सीताराम

ईश्वर हमारा आश्रय है, वही हमारा बल है और वही आपत्ति के समय में हमारी रक्षा करता है. (साम ४६-१)

७-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम | बापु के आशीर्वाद | सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
ॐ राम
पतित पावन सीताराम
"ईश्वर हमारा आश्रय है, वही हमारा
बल है और वही आपत्ति के समय में
हमारी रक्षा करता है।"[1] (साम ४६–१)
७–३–४५
[1] "God is our refuge and strength, a very present help in trouble."—*The Old Testament* (Psalm 46 : 1)
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

ॐ हे राम

रघुपति राघव राजाराम   पतित पावन सीताराम

ईश्वरका बोल है: मैं आता हूं, जाता था, न विद्यमान हूंगा। मैं सब जगह में हूं, सबमें हूं। इतना जानते हुए भी हम ईश्वरसे दूर भागते हैं और विनाशी अपूर्ण है उसका सहारा ढूंढते हैं और दुःखी होते हैं। इससे अधिक आश्चर्य किसीमें है?

८-६-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम   बापुके आशीर्वाद   सबको सन्मति दे भगवान

ईश्वर का कौल है : मैं आज हूं, कल था, भविष्य में हूंगा; मैं सब जगह में हूं, सब में हूं। इतना जानते हुए भी हम ईश्वर से दूर भागते हैं और (जो) विनाशी अपूर्ण है उसका सहारा ढूंढते हैं और दुःखी होते हैं। इस से अधिक आश्चर्य किसी में है ?

८-३-४५

रघुपति राघव राजाराम — पतित पावन सीताराम

पूर्व पश्चिम में भेद न करें. हरएक वस्तु कहीं की हो उसकी तुलना गुणदोष पर करें. तब ही शुद्ध न्याय कर सकते हैं.

९-३-४६

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम ॐ पतित पावन सीताराम

पूर्व पश्चिम में भेद न करें। हरेक वस्तु
कहीं की हो उसकी तुलना गुण दोष पर
करें। तब ही शुद्ध न्याय कर सकते हैं।

९-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

पाप-पुण्य, सुख-दुःख हमको होते हैं, ईश्वर को नहीं हैं. वह निरंजन है, निर्गुण है. इसका अर्थ हुआ कि मनुष्य कर्म का कर्ता बनता है. सत्कर्म से चढ़ता है, दुष्कर्म से पड़ता है.

२०-६-४५

पाप-पुण्य, सुख-दुःख क्यों ? ईश्वर होते हुए ईश्वर व्यक्ति नहीं है। वह नियम है, नियंता भी। इसका अर्थ हुआ कि मनुष्य कर्म का भोग बनता है। सत्कर्म से चढ़ता है, दुष्कर्म से पड़ता है।

१०-३-४५

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम

समाजकी सच्ची सेवा यह है जिससे समाज
[illegible]

ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम

समाज की सच्ची सेवा यह है जिस से समाज, मानी सब लोग, ऊंचे चढ़े। समाज देख कर ही मनुष्य कह सकता है अमुक समाज कैसे ऊंचे चढ़े।

११-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम

मनुष्य जानता है कि जब मरनेके नजदीक पहुंचता है सिवाय ईश्वर के कोई सहारा नहीं है, तो भी रामनाम लेते हिचकिचाहट होती है. ऐसा क्यों?

22-3-46

ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

मनुष्य जानता है कि जब मरने के नज़दीक पहुँचता है सिवाय ईश्वर के कोई सहारा नहीं है, तो भी रामनाम लेते हिचकिचाहट होती है। ऐसे क्यों ?

१२-३-४५

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
अहिंसा के शक्ति स्वतंत्रता पाने का
एक ही मार्ग है: मरकर जीते हैं, मारकर
कभी नहीं:
१५-३-४६
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापु के आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

अहिंसा के मार्फ़त स्वतंत्रता पाने का एक ही मार्ग है : मर कर जीते हैं, मार कर कभी नहीं।

१३-३-४५

रघुपति राघव राजाराम — ॐ राम — पतित पावन सीताराम

मरें कैसे? आत्म हत्या करके? कभी नहीं। आवश्यकता पर मरने की तैयारी रखकर मरें तब तो जिंदा रहने को लिये मरें।

१४-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

मरें कैसे ? आत्महत्या करके ? कभी नहीं। आवश्यकता पर मरने की तैयारी रख कर मरें तब तो ज़िंदा रहने के लिये मरें।

१४-३-४५

धैर्य और शांति का त्याग नहीं हो सकता है। उसका त्याग जो करना चाहें उसका रोग मिट सकता है।

१५-३-४५

धैर्य से, शांति से क्या नहीं हो सकता है !
उसका तजर्बा जो लेना चाहें उनको रोज़
मिल सकता है ।

१५-३-४५

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

किस्मत और पुरुषार्थका झगड़ा रोज चलता है: हम पुरुषार्थ करते रहें और परिणाम ईश्वर पर छोड़ें.

१६-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
क़िस्मत और पुरुषार्थ का झगड़ा रोज़
चलता है। हम पुरुषार्थ करतें रहें और
परिणाम ईश्वर पर छोड़ें।
१६-३-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

किसमत पर न सब छोड़ें, न पुरुषार्थ का नाश करें। किसमत चलती रहेगी। हम देखें कहां इसका इलाज हो सकता है, इतना फर्ज होता है, परिणाम कुछ भी हो।

१७-३-४७

क़िसमत पर न सब छोड़ें, न पुरुषार्थ का फांका करें। क़िसमत चलती रहेगी। हम देखें कहां दखल दे सकते हैं, देना फ़र्ज़ होता है, परिणाम कुछ भी हो।

१७-३-४५

रघुपति राघव राजाराम — पतित पावन सीताराम

दुःखद बात तो यह है कि हम जानते हैं क्या करना, तो भी उसे हम कर नहीं पाते. इसका उत्तर हरेक मनुष्य अपने लिये दे.

१८-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

दुःखद बात तो यह है कि हम जानते हैं क्या करना, लेकिन उसे हम कर नहीं पाते। इसका उत्तर हरेक मनुष्य अपने लिये दें।

१८-३-४५

रघुपति राघव राजाराम   ॐ हे राम   पतित पावन सीताराम

प्रतिक्षण अनुभव लेता हूं कि मौन सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना ही चाहिये तो कम से कम बोलो। एक शब्द से चले तो दो नहीं।

१९-६-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम   बापुके आशीर्वाद   सबको सन्मति दे भगवान

प्रतिक्षण अनुभव लेता हूं कि मौन सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना ही चाहिये तो कम से कम बोलो। एक शब्द से चले तो दो नहीं।

१९-३-४५

रघुपति राघव राजाराम
ॐ
पतित पावन सीताराम
छोटी२ बातें जब इत्याक करें तब समझना
कि कहां मैं आसक्ति है. उसे ढूंढो और
निकालो. बड़ी बातों में इसकी परीक्षा
है ऐसा मानना भ्रम है. बड़ी बातों में
हम मजबूर होते हैं. उसका नाम सीधा
पन नहीं है.
२०-३-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

छोटी २ बातें जब हलाक करें तब समझना कि कहीं भी आसक्ति है। उसे ढूंढो और निकालो। बड़ी बातों में हम सीधे रहते हैं ऐसा मानना भ्रम है। बड़ी बातों में हम मजबुर होते हैं। उसका नाम सीधापन नहीं है।

२०-३-४५

ऐसा मौके पर याद रखने का
श्लोक यह है: मात्रास्पर्श आते
हैं जाते हैं उन्हें सहन करना.

२२-३-४५

रघुपति राघव राजाराम   पतित पावन सीताराम

ऐसे मौक़े पर याद रखने का श्लोक यह
है : मात्रा स्पर्ष आते हैं जाते हैं, उसे
सहन करो।

२१-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम   बापुके आशीर्वाद   सबको सन्मति दे भगवान

मा कुछ करें, मुझे [illegible] न करे या न करे - इसका
प्रत्यक्ष दर्शन किया होता है। आज [illegible] हूँगा।
बा की तिथि थी। गीतापारायण थी। उसमें
कुछ भी रखा नहीं था।

२२-२-४७

रघुपति राघव राजाराम ॐ हे राम पतित पावन सीताराम

जो कुछ करें, सुव्यवस्थित करें या न करें। इसका प्रत्यक्ष दर्शन नित्य होता है। आज खूब हुआ। बा की तिथि थी। गीता पारायण थी। उस में कुछ भी रस नहीं था।

२२-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

गलती। गलती मिटती है जब कबूल की जाती है। गलती जब दबाई जाती है तब फोड़ा के जैसी फूटती है और भयंकर स्वरूप लेती है।

२३-२-४७

ग़लती ग़लती मिटती है जब दुरस्ती कर लेते हैं। ग़लती जब दबा देते हैं, तब फोड़ा के जैसी फूटती है और भयंकर स्वरूप लेती है।

२३-३-४५

रघुपति राघव राजाराम

ॐ हे राम

पतित पावन सीताराम

आत्माको पहचाननेसे, उसका ध्यान धरनेसे और उसके गुणोंका अनुकरण करनेसे मनुष्य ऊंचे जाता है। उलटा करनेसे नीचे जाता है।

२४-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

आत्मा को पहचानने से, उसका ध्यान धरने से और उसके गुणों का अनुसरण करने से मनुष्य ऊंचे जाता है। उलटा करने से नीचे जाता है।

२४-३-४५

धैर्य किसे कहें ? शंकराचार्य कहते हैं :
एक सुली—घास की—लो, समुद्र किनारे
बैठो और सुली पर पानी का बुंद लो ।
अगर धैर्य होगा और नज़दीक में ऐसी
खाई है जिस में बुंद सुरक्षित रह सकता
है, तो कालवशात् समुद्र खाली होगा ।
यह करीब २ पूर्ण धैर्य का दृष्टांत है ।

२५-३-४५

रघुपति राघव राजाराम   ॐ राम   पतित पावन सीताराम

जिसको इतना धैर्य नहीं है वह अहिंसा पालन नहीं कर सकता है.

२६-२-४२

ईश्वर अल्ला तेरे नाम   बापुके आशीर्वाद   सबको सन्मति दे भगवान

जिसको इतना धैर्य नहीं है, वह अहिंसा
पालन नहीं कर सकता है।

२६-३-४५

सांप और मनुष्य में क्या फरक? इतना ही कि सांप पेटके बल चलता है, मनुष्य पैरोंपर टटार रहकर चलता है. लेकिन यह इतना ही है. जो मनुष्य मनसे पेटके बल चलता है उसका क्या?

२७-३-४६

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

सांप और मनुष्य में क्या फ़रक़ ? देखने में सांप पेट के बल चलता है, मनुष्य पैरों पर टटार रहकर चलता है। लेकिन यह देखाव है। जो मनुष्य मन से पेट के बल चलता है, उसका क्या ?

२७-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

प्रति दिन मौन का महत्व मैं देखता हूं. सबके लिये अच्छा है लेकिन जो कामों में डूबा रहता है उसके लिये तो मौन सुवर्ण है.

२८-३-४५

प्रतिदिन मौन का महत्त्व मैं देखता हूं। सब के लिये अच्छा है, लेकिन जो कामों में डूबा रहता है उसके लिये तो मौन सुवर्ण है।

२८-३-४५

ॐ हे राम
रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
"उतावला सो बावरा, धीरा सो गंभीर!"
प्रतिक्षण इसका सत्य देखा जाता है।
२९-३-४५
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापु के आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

"उतावला सो ब्हावरा, धीरा सो गंभीरा।" प्रतिक्षण इसका सत्य देखा जाता है।

२९-३-४५

रघुपति राघव राजाराम ॐ पतित पावन सीताराम

नियम का छुट जाना कैसा खतरनाक है?
मुंबई आया और रोज़ लिखना छुटा.
लिखा ३-४-४६ २०-३-४६

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापु के आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

नियम का छूट जाना कैसा ख़तरनाक है ! मुंबई आया और रोज़ लिखना छूटा ।

(लिखा : ३-४-४५)

३०-३-४५

रघुपति राघव राजाराम
हे राम
पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

बग़ैर नियम के एक भी काम नहीं बनता।
नियम एक क्षण के लिये टूट जाय, तो
सूर्यमंडल सारा अस्त-व्यस्त हो जायगा।

(लिखा : ३-४-४५)
३१-३-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम
ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम   पतित पावन सीताराम

यह बात छोटे, मोटे, सब के लिये है ऐसा
सोच कर हम सीखें और चलें, या ज़िंदा
होते हूए भी मरें।

(लिखा : ३–४–४५)

१–४–४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम   बापु के आशीर्वाद   सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम ॐ हे राम पतित पावन सीताराम

बगैर मशक्कत के इनाम कहाँ पाया जाता है.

[illegible] -४-४५ -४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापूके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

बग़ैर ज़रूरत के हाजत बढ़ाना पापसा
लगता है।

(लिखा : ३–४–४५)
२–४–४५

आजका दिन फांसीवालों को बचाने के लिये हड़ताल का है। अगर लोग शान्त रहकर आजका काम करेंगे तो अहिंसा के मार्ग में इनका बड़ा काम किया होगा।

३-४-४५

आज का दिन फांसी वालों[1] को बचाने के लिये हड़ताल का है। अगर लोग मात्र समझ बूझ कर आज का कार्य करें, तो अहिंसा के मार्ग में हमने बड़ा काम किया होगा।

३-४-४५

[1] चिमूर वाले कैदियों के तर्फ़ इशारा है।

—सम्पादक

रघुपति राघव राजाराम — हे राम — पतित पावन सीताराम

मनुष्य जानता है क्या करना
लेकिन जानता है वह करता नहीं।
उसका क्या कारण?

४-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

मनुष्य जानता है क्या करना, लेकिन
जानता है वह करता नहीं। उसका
क्या कारण ?

४-४-४५

अगर हम बाहर के मानसिक वायुमंडल को
अलग नीकालें तो हमारा नाश ही है। बीमर
वालों के हीमों के बारे में प्रतिदिन वायुमंडल
बदलता ही रहता है। हम कर्तव्य पालन
करें और अनासक्त रहें।

८-४-४५

अगर हम बाहर के मानसिक वायुमंडल के असर नीचे आवें, तो हमारा नाश ही है। चीमूर वाले कैदियों के बारे में प्रतिदिन वायुमंडल बदलता ही रहता है। हम कर्तव्य पालन करें और अनासक्त रहें।

५-४-४५

रघुपति राघव राजाराम
हे राम
पतित पावन सीताराम

सीधी बातको भी मनुष्य टेढ़ी समझे
उसे समझानेमें कितनी भारी अहिंसा
चाहीये!

६-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

सीधी बात को भी मनुष्य टेढ़ी समझे,
उसे सहन करने में कितनी भारी अहिंसा
चाहिये !

६-४-४५

रघुपति राघव राजाराम ॐ हे राम पतित पावन सीताराम

शरीरको बचाने के लिये बहुत उद्यम करता हुं, आत्माको पहचानने के लिये इतना करता हुं क्या?

७-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

शरीर को बचाने के लिये बहुत उद्यम
करता हूँ, आत्मा को पहचानने के लिये
इतना करता हूँ क्या ?

७-४-४५

रघुपति राघव राजाराम

ॐ हे राम

पतित पावन सीताराम

और सब जुतिसे मैं गुस्सा करता हूं, रोता हूं, हंसता हूं, रहम खाता हूं. यह सब छोड़कर, धीरज रखकर, और संयम सीखना ही एक नया धर्म नहीं है क्या?

८-४-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

ग़ैर-समझ से मैं ग़ुस्सा करता हूँ, रोता हूँ, हंसता हूँ, रहम खाता हूँ। यह सब छोड़ कर, धीरज रख कर, ग़ैर-समझ मिटाना ही एक मेरा धर्म नहीं है क्या ?

८-४-४५

रघुपति राघव राजाराम — ॐ राम — पतित पावन सीताराम

हम क्या मानें? हमारी तारीफ़, हमारी निंदा? दोनों
गलत हो सकते हैं. तब हमारा इनसाफ़ हम ही करें?
इसमें भी तो काफी गलती पाई जाती है. हम कैसे
हैं सो तो ईश्वर ही जानता है. जो कि वह तो हमें कहता
नहीं है. अच्छा तो यह है कि हम अपने बारेमें कुछ
जानें नहीं, मानें नहीं. जैसे हैं वैसे हैं. जानने और
मानने से हमें कुछ फायदा न होनेवाला. हमारा
धर्म पालन ही सच्ची बात है.

८-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम — बापुके आशीर्वाद — सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

हम क्या मानें ? हमारी तारीफ़, हमारी निंदा ? दोनों ग़लत हो सकते हैं। तब हमारा इनसाफ़ हम ही करें ? इस में भी तो काफ़ी ग़लती पाई जाती है। हम कैसे हैं सो तो ईश्वर ही जानता है, लेकिन वह तो हमें कहता नहीं है। अच्छा तो यह है कि हम अपने बारे में कुछ जाने नहीं, माने नहीं। जैसे हैं वैसे हैं। जानने से और मानने से हमें कुछ फ़ायदा नहीं पहोंचता। हमारा धर्म पालन ही सच्ची बात है।

९-४-४५

बापुके आशीर्वाद

ईश्वर अल्ला तेरे नाम सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

अंधा वह नहीं जिसकी आंख फुट गई है।
अंधा वह है जो अपने दोष ढांकता है।
२०-४-४७

बापुके आशीर्वाद

ईश्वर अल्ला तेरे नाम सबको सन्मति दे भगवान

रघुपति राघव राजाराम

हे राम

पतित पावन सीताराम

अंधा वह नहीं जिसकी आंख फुट गई है ।
अंधा वह है जो अपने दोष ढांकता है ।

१०-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

मनुष्यकी शांति की कसोटी समाज में ही हो सकती है, हिमालय की चोटी पर नहीं।

२१-४-४५

रघुपति राघव राजाराम
हे राम
पतित पावन सीताराम

मनुष्य की शांति की कसोटी समाज में ही हो सकती है, हिमालय की टोच पर नहीं।

११-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम
बापुके आशीर्वाद
सबको सन्मति दे भगवान

अहिंसा एक वस्तु है, उसका पालन बिलकुल दूसरी वस्तु है।

[illegible] १५.४.४५ २२-४-४५

आदर्श एक वस्तु है, उसका पालन
बिलकुल दूसरी वस्तु है।

(लिखा : १५-४-४५)
१२-४-४५

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

सिवाय आदर्शके मनुष्य सुकान रहित नइयाके जैसा है.
लिखा १५-४-४५ १३-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम सबको सन्मति दे भगवान

बापुके आशीर्वाद

सिवाय आदर्श के मनुष्य सुखान रहित
जहाज़ के जैसा है।

(लिखा : १५-४-४५)

१३-४-४५

रघुपति राघव राजाराम

पतित पावन सीताराम

मेरे पास आदर्श है ऐसा तब ही कहा जाय
जब मैं उसे पहुंचने की कोशिश
करता हूं.

[illegible] १४-४-४५

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

मेरे पास आदर्श है, ऐसे तब ही कहा जाय
जब मैं उसे पहुंचने की कोशिश करता हूँ ।

(लिखा : १५-४-४५)

१४-४-४५

हम कोशीश करके संतुष्ट रहें बशर्ते कि कोशीश
सही और पूरी शक्ति हो. परिणाम सिर्फ कोशीश
पर निर्भर नहीं रहता. और चीज़ें होती हैं जिस
पर हमारा कोई अंकुश नहीं होता.

१२-४-४५

हम कोशिश से संतुष्ट रहें, बशर्तेकि कोशिश सही और यथाशक्ति हो। परिणाम सिर्फ़ कोशिश पर निर्भर नहीं रहता। और चीज़ें होती हैं जिस पर हमारा कोई अंकुश नहीं होता।

१५-४-४५

रघुपति राघव राजाराम ॐ हे राम पतित पावन सीताराम

सही कोशीश किसे कहें? एक बात यह है कि
सही कोशीश की बहुत वक्त में इच्छित फल मिलता
है। इस लिये फल सही कहा जाता है कोशीश सही
थी. लेकिन अनुभव से मालुम होता है ऐसा हमेशा
नहीं बनता. सही कोशीश यह है कि साधन की
शुद्धता के बारे में निश्चय है और विपरीत फल
दिखने पर भी साधन बदलता नहीं, न उद्यम
बदलता है या कम होता है.

१६-४-४६

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापु के आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

सही कोशिश किसे कहें ? एक बात यह है कि सही कोशिश से बहुत वक्त हमें इच्छित फल मिलता है। इसलिये फल से ही कहा जाता है कोशिश सही थी। लेकिन अनुभव से मालुम होता है ऐसे हमेशा नहीं बनता। सही कोशिश यह है कि साधन की योग्यता के बारे में निश्चय है और विपरीत फल देखने पर भी साधन बदलता नहीं, न उद्यम बदलता है या कम होता है।

१६–४–४५

रघुपति राघव राजाराम

ॐ
राम

पतित पावन सीताराम

यथा शक्ति किसे कहें? जिससे मनुष्य अपनी
सब शक्ति व जोर संकोच बिना खर्च करता है. ऐसे
शुभ प्रयत्न में सफलता प्रायः होती है.

बापु

ईश्वर अल्ला तेरे नाम

बापुके आशीर्वाद

सबको सन्मति दे भगवान

यथाशक्ति किसे कहें ? जिससे मनुष्य अपनी सब शक्ति बगैर संकोच के खर्च करता है। ऐसे शुभ प्रयत्न में सफलता प्रायः होती है।

१७–४–४५

रघुपति राघव राजाराम ॐ राम पतित पावन सीताराम

मनुष्य अपने निर्णय निश्चित प्रमाणको आधारभूत करके करता है और उसपर चलता है। ऐसी हालतमें अच्छा है कि जहांतक बनता हो कुछ निर्णय करना नहीं और परिणामके बारेमें तटस्थ रहना। निर्णय करनेका धर्म बन जाता है तब पूरी सावधानी रखकर ही निर्णय करना और निडरतासे अमल करना।

१८-४-४७

ईश्वर अल्ला तेरे नाम बापुके आशीर्वाद सबको सन्मति दे भगवान

मनुष्य अपने निर्णय नहिंवत् प्रमाण को आचारभूत करके करता है और उसी पर चलता है। ऐसी हालत में अच्छा है कि जहां तक बन सके कुछ निर्णय करना नहीं और परिणाम के बारे में तटस्थ रहना। निर्णय करने का धर्म बन जाता है, तब पूरी सावधानी रख कर ही निर्णय करना और निडरता से अमल करना।

१८-४-४५

अहिंसा जैसी भारी वस्तु छोटी लगती है और
[illegible] जैसी सबसे छोटी वस्तु का इतना ही
ख्याल है जितना भारी का.

१८-४-४७

असंगत ऐसी मोटी वस्तु छोटी लगती है, और सुसंगत जैसी सब से छोटी वस्तु का इतना ही स्थान है जैसा मोटी का।

१९-४-४५

परिशिष्ट

१

वृक्षन् से मत ले, मन तू वृक्षन् से मत ले।

काटे वाको क्रोध न करही,
सींचे न करहि स्नेह...वृक्ष०
धूप सहत अपने शिर ऊपर,
और को छांह करेत।
जो वाही को पत्थर चलाय,
ताहि को फल देत...वृक्ष०
धन्य धन्य ये परोपकारी,
वृथा मनुष्य की देह।
सूरदास प्रभु कहँ लग वरनौ,
हरिजन की मत ले...वृक्ष०

२

अब हौं कासों बैर करौं ?

कहत पुकारत प्रभु निज मुखते।
"घट घट हौं बिहरौं" ॥ ध्रु० ॥
आपु समान सबै जग लेखौं।
भक्तन अधिक डरौं ॥
श्रीहरीदास कृपाते हरिकी।
नित निर्भय विचरौं ॥ १ ॥

अनुक्रमणिका

ह